सेवा में,

सचिव
संगीत नाटक अकादमी
फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली

<u>विषय:-</u> अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योजना 2015-16 के अंतर्गत आवेदित परियोजना **"मैयरा पायिबी : शोध, प्रलेखन एवं लघु वृत्तचित्र निर्माण" की प्रथम रिपोर्ट प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में |**

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

महोदय,

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) योजना 2015-16 के निमित्त **मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा** परियोजना पर शोध प्रलेखन का प्रथम वृत्त (रिपोर्ट) जमा किया जा रहा है |

इस परियोजना के क्रियान्वयन को दो भागों में बांटा गया है | पहले भाग में परियोजना के अंतर्गत शोध (Research) कर प्रलेखन (Documentation) का कार्य पूरा किया गया है | जिसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत अनुभाग, संगीत नाटक अकादमी को जमा किया जा रहा है |
साथ में "**भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र**" (NATIONAL INVENTORY REGISTER) की प्रति भी संलग्न है |
आग्रह है कि उपरलिखित परियोजना के अंतर्गत तैयार वृत्त (रिपोर्ट) के प्रथम भाग के रूप में **शोध पूर्ण प्रलेखन** को स्वीकार करें |

धन्यवाद |

भवदीय

गुलशन
स्थायी खाता संख्या (PAN) :- DUBPK6987E
पता :- पी-6/101-102
मंगोल पुरी नई दिल्ली-110083
मोबाइल- 8285304087

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

<u>मैयरा पायिबी : शोध, प्रलेखन एवं लघु वृत्तचित्र निर्माण</u>

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

1. प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य -

<u>उत्तर-</u> प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र **मणिपुर** प्रदेश है |

2. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में)-

<u>उत्तर-</u> मैयरा पायिबी (**Meira Paibi**)

3. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण -

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र **मणिपुर** है और इस क्षेत्र की भाषा '**मेतेई' (Meiteilon / Manipuri)** है | जिसकी लिपि भी मेतेई ही है | किन्तु वर्तमान में लेखन के लिए बंगाली लिपि का ही अधिक प्रचलन है | मेतेई भाषा, मणिपुर प्रदेश के मूल मेतेई समुदाय द्वारा बोली जाती है | **मेतेई भाषा** मणिपुर के रहने वाले **मेतेई समुदाय की मातृभाषा** है |

मणिपुर प्रदेश में कुल 9 जिले हैं | और यह **मेतेई समुदाय मणिपुर के घाटी क्षेत्र** अर्थात चार जिलों 'पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, बिष्णुपुर और थोउबाल में बहुसंख्या में बसा है | मेतेई समुदाय के अलावा मणिपुर में रहने वाले अन्य समुदायों (नागा, कूकी, नेपाली तथा अन्य बाहरी लोग जिनमें मुस्लिम भी शामिल हैं) के लोग भी संपर्क भाषा के लिए मेतेई (मणिपुरी) भाषा का उपयोग करते हैं | लेकिन मेतेई भाषा इन जनजातियों की मातृभाषा नहीं है | अपनी जनजाति या कबीले में बात करने के लिए ये अपनी जनजातीय बोली का प्रयोग करते हैं | जनजाति के अनुसार इन समुदायों की मातृभाषा भी अलग-अलग हैं |

4. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)-

<u>उत्तर-</u> मैयरा पायिबी एक ऐसी परंपरा है जिसकी नींव 19वीं शताब्दी के अंत में और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में दिखाई देती है | और वर्तमान में इसका प्रभाव क्षेत्र पूरा मणिपुर है | आज मणिपुर में मैयरा पायिबी के कई संगठन कार्यरत हैं | जो सरकारी रूप से पंजीकृत भी हैं और कई संगठन पंजीकृत नहीं भी | उनमें से कई प्रमुख संगठनों से इस परियोजना कार्य के सन्दर्भ में संपर्क किया गया | इस परम्परा से सम्बंधित प्रमुख संगठन तथा उनके प्रतिनिधि का विवरण निम्नलिखित है |

<u>प्रतिनिधि संगठन विवरण क्रमांक एक</u>

1. **संगठन का नाम - 'All Manipur Women's Reformation and Development Samaj'** (इसे **नूपी समाज** के नाम से भी जानते हैं)
2. **प्रमुख व्यक्ति का नाम -** थोकचोम रमानी देवी
3. **कार्यालय पता - पैलेस कंपाउंड, भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर के सामने, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर, भारत**
4. **संपर्क-** 8794171643

<u>प्रतिनिधि संगठन विवरण क्रमांक दो</u>

1. **संगठन का नाम - 'Apunba Manipur Kanba Ima Lup' (AMKIL)**
2. **प्रमुख व्यक्ति का नाम -** फनजोउबम ओन्गबी सखी
3. **कार्यालय पता -** कैशम्पट, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर, भारत

<u>प्रतिनिधि संगठन विवरण क्रमांक तीन</u>

1. **संगठन का नाम -** "बामोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन"
2. **प्रमुख व्यक्ति का नाम -** सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी
3. **कार्यालय पता -** बामोनकाम्पु, मखा लेकाई, इम्फाल पूर्व, मणिपुर, भारत
4. **संपर्क-** 9612157546

5. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है / पहचान है |

<u>उत्तर-</u> - वर्तमान में मणिपुर प्रदेश में कुल 9 जिले हैं, जिसमें 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 51 शहरी इलाके और 2582 ग्रामीण इलाके हैं और वर्तमान में मणिपुर की कुल जनसंख्या 2,855,794 (लगभग 28.56 लाख) है | जनसंख्या के घनत्व की दृष्टि से पश्चिमी इम्फाल जिले के बाद थोउबाल जिला दूसरे क्रमांक पर है | 2011 में हुई जनगणना के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार जनसंख्या की दृष्टि से मणिपुर की 65.5 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहती है और 35.5 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्र में रहती है |

अत: योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्वों की जीवंतता का विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र मणिपुर के घाटी क्षेत्र के चार जिले 'पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, बिष्णुपुर और थोउबाल हैं | इन जिलों में मेतेई समुदाय के लोग बहुसंख्या रहते हैं |

अन्य जिले पहाड़ी क्षेत्र हैं, जहाँ मेतेई समाज बहुत कम संख्या में है | इसलिए प्रस्तावित परियोजना का अस्तित्व मुख्यत: इन्हीं चार जिलों में विशेष रूप से विद्यमान है | किन्तु इसका प्रभाव मणिपुर के हर क्षेत्र में होता है |

6. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा/उसका विवरण

    1. मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ

    (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)

    2. प्रदर्शनकारी कलाएं
    3. **सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि**
    4. प्रकृति एवं जीव-जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं
    5. पारंपरिक शिल्पकारिता
    6. अन्यान्य

<u>उत्तर-</u> योजना के अंतर्गत प्रस्तावित विषय एक **सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत / परम्परा है** | जिसका प्रभाव पूरे मणिपुर प्रदेश में है | किन्तु विशेषत: इसका प्रचलन और प्रभाव मणिपुर के घाटी क्षेत्र के चार जिलों में प्रमुख रूप से है | ये चार जिले हैं - **पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, थोउबाल तथा बिष्णुपुर** | ये चार जिले मणिपुर प्रदेश की मूल आबादी मेतेई समुदाय बहुल हैं |

7. कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें |

<u>उत्तर-</u> **मैयरा पायिबी** मणिपुर समाज में स्थापित एक सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा है, जिसका नेतृत्व **मेतेई महिलायें** करती हैं | **मैयरा** का अर्थ है- **मशाल** तथा **पायिबी** का अर्थ है **उस मशाल को धारण करने वाली महिला** | जलती मशाल धारण की हुई महिला को मणिपुरी भाषा में **मैयरा पायिबी** कहा गया है | मेतेई महिलाएं ये मशाल अकारण ही धारण नहीं करती, इसके पीछे वृहद् इतिहास है, | जो मणिपुर की पहचान को अधिक व्यापक तथा ऐतिहासिक परिचय को और अधिक गौरवान्वित करती है | इस परम्परा के वर्तमान नाम मैयरा पायिबी की उपयोगिता को रुचिपूर्ण तथा सार्गाभित तरीके से इस प्रकार समझा जा सकता है |

जब मणिपुर में पुरुषों द्वारा नशे और व्यसन के बाद हिंसा (घरेलू एवं सार्वजनिक दोनों) की गतिविधियाँ बढ़ने लगीं तो इसका प्रतिकार करने का साहसिक प्रयास वहां की महिलाओं ने ही किया | गाँव की महिलाएं एक स्थान पर एकत्रित होने लगीं | ये महिलायें घरों से पैदल ही निकलती थीं और गाँव के हर छोर का निरीक्षण करती थीं | कोई पुरुष यदि शराब पीता, जुआ खेलता, घर में अपनी पत्नी और बच्चों से मारपीट या गाली-गलौच करता हुआ मिलता था तो उसका विरोध करती थीं | पीड़िता को बचाती थीं | शराबी व्यक्ति की सार्वजनिक रूप से निंदा करती थीं ताकि लज्जित होने के भय से वह मदिरा सेवन का त्याग करे | इतने पर भी शराब पीता व्यक्ति यदि नहीं मानता था तो उसे दण्डित करती थीं, आवश्यकता अनुसार अधिक दंड देने के लिए उस पर जुर्माना भी लगाती थीं और भविष्य में दुबारा ऐसा ना करने की सलाह देते हुए, बाहर शराब पीते पुरुष को घर तक छोड़कर आती थीं |

महिलाओं के विरोध का यह तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण था |इतना ही नहीं, मणिपुर में शासनिक दृष्टि से भ्रमित नीतियाँ बनाने और उनका क्रियान्वयन करने वालों के

खिलाफ भी मणिपुरी महिलाओं ने कई बार मोर्चा खोला है | यह सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये गए, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मेतेई महिलाओं ने निभाई | घर में पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने से लेकर मैयरा पायिबी बनने तक की एक लम्बी यात्रा और अनूठे प्रयासों, विफलताओं-सफलताओं तथा आज इसके मूल स्वरूप में आते बदलाव की वृहद् यात्रा को शोध प्रलेखन में लिखा गया है |

8. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त ? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है ?

<u>उत्तर-</u> यह परम्परा मणिपुर में लम्बे समय से प्रचलन में है | इस परम्परा के अधिकारी और इन्हें आगे बढ़ाने वाली मणिपुर में मेतेई समाज की ही महिलाएं हैं | ये महिलाएं विवाहित होती हैं | विशेषकर वे महिलाएं जिनकी आयु 40-45 से अधिक की है | प्रमुख मैयरा पायिबी महिलाओं का यह विशेष दायित्व बनता है कि वे समाज हित में इस परम्परा की जीवन्तता के लिए आने वाली पीढ़ी को तैयार करें और इस प्रथा को आगे बढाने और निरंतर बनाये रखने का दायित्व उन्हें सौंपें | मैयरा पायिबी की कार्यपद्धति और इस प्रथा में लोगों का विश्वास इतना अटूट है कि धीरे-धीरे महिलाएं इस समूह से जुडती चली जाती हैं | यह मणिपुर की सबसे सशक्त सामूहिक परम्परा है | किन्तु शनैः-शनैः इस परम्परा का मूल स्वरूप परिवर्तित होता जा रहा है |

9. ज्ञान और हुनर / कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है?

<u>उत्तर-</u> इस परम्परा का मूल तत्व अपने समाज की सांस्कृतिक समृद्धि बनाये रखना है | समय अनुसार आवश्यकता पड़ने पर मैयरा पायिबी का कर्तव्य समाज में असामाजिक गतिविधियाँ होने/बढने से रोकना भी है | इस हेतु यह समूह अपनी निश्चित पद्धति अनुसार कार्य करता है | आज जब मणिपुर में लम्बे समय से अशांति व्याप्त है ऐसे में मैयरा पायिबी समाज की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है |

क्योंकि यह एकमात्र समूह है जो संगठित रूप से कार्य करता है और जिसे जन-जन का विश्वास प्राप्त है | इनकी सामूहिक कुशलता के बल पर ही मणिपुर में कई बड़े बदलाव आये हैं और समाज में सामजिक-सांस्कृतिक शुचिता को फिर से स्थापित करने में मदद मिली है | वर्तमान में भी उनकी सामूहिक शक्ति की सकारामक दिशा में आवश्यकता है |

जिस मूल विचार के साथ मैयरा पायिबी ने अपना वर्तमान अस्तित्व पाया है वास्तव में उसी मूल स्वरूप के अंतर्गत आज की गतिविधियों का सञ्चालन भी आवश्यक है | क्योंकि वर्तमान में जो लोग मैयरा पायिबी समाज का नेतृत्व कर रहे हैं वे भी अंततोगत्वा उसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं जिसकी नींव आज से वर्षों पहले समाज सुधार और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए पड़ी थी |

10. आज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता हैं?

<u>उत्तर-</u> सर्वविदित है कि पिछले लम्बे अरसे से पूर्वोत्तर भारत कुछ हद तक अशांत रहा है | समय समय पर कुछ असामाजिक - अरष्ट्रावादी तत्व राष्ट्रीय संपत्तियों और नागरिकों

को .हानि पहुंचाते हैं | ऐसे में मैयरा पायिबी की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है | जो लोग बेकारी के कारण या अन्य किसी भ्रम में आकर असामाजिक गतिविधियों में लिप्त होते हैं या अराष्ट्रवादी ताक़तों का साथ देते हैं | ऐसा होने से रोकने में मैयरा पायिबी की भूमिका निश्चित रूप से कारगर हो जाती है | भावी पीढ़ी अनैतिक - अरष्ट्रावादी पथ की ओर ना जाकर अपने परिवार-ग्राम-देश हित में स्वयंसेवा भाव से काम करे, इस हेतु वह जनमानस को तैयार करती है | अत: मणिपुर में मैयरा पायिबी का सामाजिक-सांस्कृतिक आयोजन वर्तमान के सन्दर्भों में अत्यधिक मायने रखता है | जबकि मणिपुर में पिछले लम्बे अरसे से अन्यान्य कारणों से अशांति का माहौल बना हुआ है |

11. क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों. क्या प्रस्तावित योजना के तहत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा के विषय में ऐसा कुछ नहीं है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है बल्कि यह परम्परा समाज को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक सिद्ध होती है |

12. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है ?

<u>उत्तर-</u> हाँ, प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा की योजना उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है |

13. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/क़दमों/प्रयासों के बारे जानकारी, जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं.

<u>उत्तर-</u> उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है |

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम (संचरण)
2. संगोष्ठी (ग्राम, जिला एवं प्रदेश स्तर पर)
3. सामाजिक-सांस्कृतिक जागरूकता अभियान
4. मैयरा पायिबी स्थापना दिवस आयोजन (सभी मैयरा पायिबी समूहों का सामूहिक)
5. वार्षिक मिलन कार्यक्रम (प्रत्येक मैयरा पायिबी संगठन द्वारा)
6. सभी मैयरा पायिबी (पंजीकृत अथवा गैर पंजीकृत) संगठनों का विशाल सम्मलेन
7. रैली (लेकाई तथा ग्राम स्तर पर)
8. सेमीनार (ऐसे सेमिनार जिसमें अन्य लोग भी शामिल हो सकें)
9. परम्परा का उसके मूल स्वरूप में संरक्षण एवं संवर्धन

14. स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण दें |

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए स्थानीय, राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर अधिकारियों द्वारा कोई विशेष उपाय हेतु प्रयास नहीं किये गये हैं | अपितु मैयरा पायिबी का कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण मणिपुर है फिर भी सरकारी स्तर पर इस परम्परा की गतिविधियों में सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के आधारभूत तत्वों को फिर से पुनर्जीवित करने के सामूहिक प्रयासों का इतिहास नगण्य ही है |

15. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का व्योरा दें |

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा के तत्वों के व्यवहार, जीवंतता और भविष्य को खतरा है | हालाँकि मैयरा पायिबी का एक काम अन्याय और गलत व्यवहार के विरुद्ध आवाज़ उठाना है किन्तु साथ में सामाजिक विकास, जिसके लिए इस परम्परा का विकास हुआ, उस पर भी अपनी गतिविधियों को केंद्रित रखना आवश्यक है | अन्यथा वर्तमान परिस्थितियों को देखें तो मणिपुर में मैयरा पायिबी की गतिविधियाँ आज केवल सेना और सरकार के विरोध तक सीमित रह गयीं हैं | वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और दिग्भ्रमित गतिविधियों एवं सम्बंधित कारणों से यह स्पष्ट है | शोध प्रलेखन में समाचार पत्र की प्रतियां वर्तमान परिदृश्य के साक्ष्य सम्बंधित सन्दर्भ रूप में संलग्न हैं|

16. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ?

(इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके | ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके |)

<u>उत्तर-</u> मैयरा पायिबी स्वयं में एक विचार है जिसके तहत सभी महिलाएं एकत्रित होती हैं | किन्तु समय के साथ हुए घटनाक्रमों में जो गतिविधियाँ अपना मूल स्वरूप खो चुकी हैं उसे पुन: स्थापित करने हेतु निम्न प्रयास किये जाने आवश्यक हैं -

1. मैयरा पायिबी विषय पर सभाएं, सेमिनार और अभियान |

2. मैयरा पायिबी जिस मूल सोच के साथ शुरू हुई उसको बढ़ावा |

3. मैयरा पायिबी की कोशिशों/प्रयासों में सकारात्मक रूप से तेज़ी लाना |

4. महिलाओं द्वारा युवा पीढ़ी को देशहित में प्रोत्साहित करने और उन्हें असामाजिक गतिविधियों में लिप्त ना होने देने के लिए कार्यक्रम |

5. सांस्कृतिक समन्वय कार्यक्रम |

6. सभी मैयरा पायिबी संगठनों को एकसूत्र में बाँधने के लिए कार्यक्रम |

इसके अतिरिक्त अन्य उपाय भी अपनाए जा सकते हैं |

17. सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

<u>उत्तर-</u> जहाँ तक इस सामाजिक परम्परा में सामुदायिक सहभागिता का प्रश्न है तो मणिपुर में मेतेई समाज की प्रत्येक विवाहित महिला मैयरा पायिबी है | मणिपुर में मैयरा पायिबी की दृष्टि से अपने उद्देश्य को बढ़ाने के लिए वैचारिक रूप से ये महिलाएं काफी सशक्त है |

18. सम्बंधित समुदाय के संघठन(नों) या प्रतिनिधि (यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से जुड़ें हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य ग़ैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

<u>उत्तर-</u>

1. संस्था /कम्पनी/ हस्ती का नाम-

   सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी

2. सम्बंधित/ अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क-

मैयरा पायिबी, "बामोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन"

3. पता- **पैलेस कंपाउंड, भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर के सामने, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर,**
4. फोन नंबर : मोबाइल न. : **9612157546**
5. ईमेल :
6. अन्य सम्बंधित जानकारी :-

सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी, लेकाई स्तरीय मैयरा पायिबी समूह की सदस्या हैं |

19. किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय / राज्यकीय / राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें |

<u>उत्तर-</u> इस सन्दर्भ में इस प्रकार की कोई लाइब्रेरी या डाटा क्रिएशन सेंटर अभी तक विकसित नहीं किया गया है | हालांकि इस परम्परा से सम्बंधित कई संस्थाएं निजी तौर पर इस प्रकार का प्रयास करती हैं | कुछ संस्थाओं का विवरण प्रश्न क्रमांक 4 तथा 18 के उत्तर में दिया गया है |

20. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो-विजुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों / व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि) जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के बारे में हों |

<u>उत्तर-</u> मणिपुर विश्वविद्यालय से पीएचडी की एक स्कॉलर द्वारा इस विषय पर पीएचडी थीसिस "Women's grassroots movements highlighting the Naga Mothers as well as the Meira Paibi in Manipur" (शोध) लिखा गया है | जिसका संकलन मणिपुर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मौजूद है |

इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के संयुक्त प्रयास से डाटा संकलन कराया गया है, इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाया गया है | जिसमें विषय से सम्बंधित कई प्रकार के डाटा दिए गए हैं | यह पुस्तक है - MANIPUR: PERILS OF WAR AND WOMANHOOD- By: The Civil Society Coalition on Human Rights in Manipur and the UN.

हस्ताक्षर .....

नाम व पदनाम- गुलशन

संस्थान का नाम .....
(यदि है तो)

पता :- पी ब्लाक, गली संख्या 6
गृह संख्या- 101-102
मंगोल पुरी, नई दिल्ली-110083
फोन न. .....

मोबाइल :- 8285304087

ईमेल :- gpreit07@gmail.com

वेबसाइट .....

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 2015-16 के निमित्त

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा का प्रलेखन

अनुक्रमणिक

विषय	पृष्ठ क्रमांक
1. परियोजना खाका (ब्लूप्रिंट)	i-iii
2. शोध सार एवं महत्व	1-2
3. विषय प्रवेश-	3
4. मैयरा पायिबी एक परिचय	3
5. मैयरा पायिबी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	4
6. लाल्लुप काबा से शुरुआत	5
7. महिलाओं का आर्थिक स्वावलंबन	6
8. मणिपुर में महिलाओं का अहिंसात्मक विरोध प्रदर्शन	7
9. नूपीलान : 1904 और 1939-	7
10. निशाबंदी और समाज सुधार-	8
11. निशाबंदी से मैयरा पायिबी : विकासयात्रा में नाम परिवर्तन-	10
12. गृहणी से मैयरा पायिबी बनने तक का सफ़र-	11
13. मैयरा पायिबी के कार्य की दिशा में बदलाव-	11

14. अफ्स्पा अधिनियम 1958 और मैयरा पायिबी की गतिविधियाँ- 12

15. सैन्य ताकतों का विरोध और मैयरा पायिबी संगठनों का निर्माण- 14

16. मैयरा पायिबी का कार्य एवं उसकी स्वीकार्यता- 15

17. मैयरा पायिबी के उद्देश्य और कार्य पद्धति- 15

18. मैयरा पायिबी की सांगठनिक व्यवस्था एवं फैलाव- 16

19. मैयरा पायिबी की वर्तमान ध्वजवाहक- 17

20. मैयरा पायिबी समाज की संचार व्यवस्था- 18

21. राजनीतिक दृष्टि से मैयरा पायिबी की महत्ता- 19

22. उल्लेखनीय कार्य का पुरस्कार- 19

23. मैयरा पायिबी की संगठनात्मक शक्ति- 20

24. मैयरा पायिबी की संगठनात्मक संरचना- 20

25. मैयरा पायिबी संगठन का कार्यक्षेत्र- 21

26. प्रमुख मैयरा पायिबी संगठन- 21

27. मैयरा पायिबी के विरोध का स्तर और अहिंसात्मक व्यवहार- 22

28. मैयरा पायिबी की सरकार से अपेक्षा- 24

29. निष्कर्ष- 25

30. फोटो- 26-27

31. सुर्ख़ियों में मैयरा पायिबी- 28-36

32. सन्दर्भ सूची- 37-38

BLUEPRINT OF THE ICH 2015-16 PROJECT- MEIRA PAIBI

ICH-2015-16 के अंतर्गत परियोजना मैयरा पायिबी की मूल योजना

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

1. परियोजना से सम्बंधित संक्षिप्त परिचय

मैयरा पायिबी मणिपुर समाज में स्थापित एक सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा है, जिसका नेतृत्व मेतेई महिलायें करती हैं | मैयरा का अर्थ है- मशाल तथा पायिबी का अर्थ है उस मशाल को धारण करने वाली महिला | जलती मशाल धारण की हुई महिला को मणिपुरी भाषा में मैयरा पायिबी कहा गया है |

मैयरा पायिबी द्वारा यह सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये गए, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मेतेई महिलाओं ने निभाई | महिलाओं के विरोध का तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण होता है | घर में पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने से लेकर मैयरा पायिबी बनने तक की एक लम्बी यात्रा और अनूठे प्रयासों, विफलताओं-सफलताओं तथा आज इसके मूल स्वरूप में आते बदलाव की वृहद् यात्रा को शोध प्रलेखन में लिखा गया है |

2. शोध कार्य के उद्देश्य :

1. मैयरा पायिबी परम्परा के मूल रूप को संजोना, प्रलेखित करना तथा दर्शाना |
2. इस सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा में घटनाओंवश हुए बदलावों के कारण उसके वर्तमान रूप का वर्णन करना |
3. मूल विचार की जीवंतता की दृष्टि से, महत्वपूर्ण प्रयासों से फलित इस परम्परा को उसके मूल रूप में ही आगे बढ़ाने का प्रयास करना |
4. मैयरा पायिबी विषय को मणिपुर के बाहर भी विचार के रूप में समाज तक पहुँचाना |

3. परियोजना का क्रियान्वयन :

परियोजना को पूरा करने के लिए क्रियान्वयन में निम्नलिखित चरण अपनाये जा रहे हैं :-

1. शोध कार्य
2. साहित्य अध्ययन एवं समीक्षा
3. साक्षात्कार
4. शोध प्रलेखन
5. साक्षात्कार आधारित लघु वृत्तिचत्र निर्माण

4. **परियोजना की समयावधि :**

परियोजना कार्य पूर्ण करने हेतु एक वर्ष की समयावधि |

5. **परियोजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों /की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र सम्बंधित अन्य तथा परियोजना से (आदि महादेश ,देश ,राज्य ,प्रदेश ,ग्राम) सम्बंधित जानकारी**

वर्तमान में मणिपुर प्रदेश में कुल 9 जिले हैं | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों की जीवन्तता का विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र मणिपुर घाटी क्षेत्र के मेतेई बहुल चार जिले शामिल हैं - पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, थोउबाल और बिष्णुपुर |

6. **आपके अनुसार परियोजना का निष्कर्ष**

शराब मुक्त मणिपुर बनाने में मुख्य भूमिका निभाने के कारण इन्हें निशाबंदी भी कहा जाता था और फिर जब इनके कार्य का दायरा बढ़ा तो यही महिलाएं मैयरा पायिबी के नाम से पहचानी जाने लगीं | लेकिन हर परिवर्तन में कार्य का हेतु समाज और राष्ट्र निर्माण की भावना ही रही और कार्य करने का अहिंसात्मक तरीका मेतेई संस्कृति की ही देन है | आज उस सोच का स्वरुप जरूर बदल गया है लेकिन इसे उसकी मूल सोच में जीवित रखने की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएं ही वह एक सूत्रमय शक्ति हैं जिसके कारण परिवार, घर समाज और राष्ट्र एकता के सूत्र में बंध सकता है |

7. **परियोजना से सम्बंधित फोटो (प्राथमिक स्तरीय)**

अन्य चित्र शोध प्रलेखन प्रथम वृत्त में संलग्न |

थोकचोम रमानी देवी
मैयरा पायिबी समाज की सबसे वरिष्ठ नेतृत्व में से एक |

सचिव, आल मणिपुर वीमेन'स रिफोर्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज (नूपी समाज)

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) 2015-16 के निमित्त

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा

शोध, प्रलेखन एवं लघु वृत्तचित्र निर्माण : प्रथम रिपोर्ट

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

शोध सार एवं महत्व

शोध सार

मणिपुर की समृद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जन्मी परम्परा का वर्तमान नाम है- मैयरा पायिबी | ऐसी परम्परा जिसने मणिपुर को हर क्षेत्र में स्वाबलंबी बनाया | महिलाओं की संगठनात्मक शक्ति की इसी सोच ने **मैयरा पायिबी** को जन्म दिया | ऐसी परम्परा जिसने महिलाओं की साहसिक प्रवृत्ति को मर्यादा में बांधे रखा |

जिस परम्परा की नींव मणिपुर के सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण के लिए पड़ी थी, उसका स्वरुप वर्तमान में बदलता जा रहा है | गतिविधियों का उद्देश्य वही है, लेकिन पद्धति बदली है | उनके प्रयास का मूल लक्ष्य मणिपुर और वहां के लोगों के जन-जीवन में सुधार और विकास ही है किन्तु अब प्रयासों का दायरा और दिशा दोनों अधिक विस्तृत हो गए हैं | पहले जो विरोध अपने लेकाई (इलाके) और लेइपाक (प्रदेश/मातृभूमि) के उत्पाती तत्वों के विरोध तक सीमित था, अब वह सरकार और सेना के (उनकी दृष्टि में) अनुचित व्यवहार के विरुद्ध विरोध तक पहुँच चुका है |

जब मणिपुर में पुरुषों द्वारा नशे और व्यसन के बाद हिंसा (घरेलू एवं सार्वजनिक दोनों) की गतिविधियाँ बढ़ने लगीं तो इसका प्रतिकार करने का साहसिक प्रयास सर्वप्रथम वहां की महिलाओं ने ही किया | इतना ही नहीं, मणिपुर में शासनिक दृष्टि से भ्रमित नीतियाँ बनाने और उनका क्रियान्वयन करने वालों के खिलाफ भी मणिपुरी महिलाओं ने कई बार मोर्चा खोला है |

यह सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये गए, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका महिलाओं ने निभाई | किन्तु 20वीं शताब्दी का उत्तरार्ध अर्थात 1980 आते-आते इसका स्वरुप बदलता चला गया |

वे कौन से कारक और कारण थे जिन के क्रम में इस पारम्परिक व्यवस्था का स्वरुप आज उसके मूल स्वरूप से भिन्न हो चला है तथा इस सामाजिक परम्परा को उसके मूल रूप में सहेजने और आगे बढ़ाने के लिए इस प्रयास का कितना महत्व है, इसका क्रमवार विस्तृत उल्लेख शोध प्रलेखन में प्रमुख रूप से शामिल है | शुरुआत में किन महिलाओं ने इसका नेतृत्व किया, आज उनका उत्तरदायित्व कौन निभा रहे हैं, अतीत और वर्तमान का पूरा घटनाक्रम इस शोध प्रलेखन में उल्लिखित है |

<u>महत्व-</u>

यह विषय पूर्वोत्तर और मणिपुर में पिछले 6 वर्षों में रहने के दौरान अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योजना के अंतर्भूत तत्व की विषयात्मक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए आवेदित किया गया था |

वास्तव में आज मणिपुर की प्राचीन सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को जागृत रखने वाली उसी परम्परा का वर्तमान रूप मैयरा पायिबी है | जिसका स्वरूप वर्तमान समय में कुछ मायनों में बदला है |

यह शोध प्रलेखन उसके मूल रूप को दर्शाता, संजोता तथा प्रलेखित करता है साथ ही इस सामाजिक-सांस्कृतिक विचार में घटनाओंवश हुए बदलावों के कारण उसके वर्तमान रूप का भी वर्णन करता है |

मूल विचार की जीवंतता की दृष्टि से, महत्वपूर्ण प्रयासों से फलित इस परम्परा को उसके मूल रूप में जीवित रखना वर्तमान में सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से समृद्ध मणिपुर को जीवित रखने के सामान है | इस दृष्टि से भारत की मूर्त सांस्कृतिक विरासतों के निमित्त किये गए इस शोध की मणिपुर के सन्दर्भ में विशेष महत्ता है |

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा

(अमूर्त सांस्कृतिक विरासत)

शोध प्रलेखन

विषय प्रवेश

भारत के वामभाग में पूर्वोत्तर क्षेत्र का प्राकृतिक और सांस्कृतिक समृद्धि से परिपूर्ण राज्य है- मणिपुर | क्योंकि यह परियोजना कार्य मणिपुर की सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखने के लिए आवश्यक महिला शक्ति की पहचान **'मैयरा पायिबी'** पर आधारित है, इसलिए यह उल्लेखनीय है कि मणिपुर में भी (कुछ प्रदेश जैसे मेघालय को छोड़ दें तो) भारत के अन्य स्थानों की भांति पुरुष-प्रधान समाज अर्थात पितृसत्तात्मक समाज की ही रचना है |

लेकिन महिला के अधिकारों के मामले में अन्य स्थानों की तुलना में मणिपुर अप्रतिम उदहारण है | जहाँ महिलाओं ने स्वयं ही अपने राष्ट्र को सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ करने की अघोषित जिम्मेदारी सम्भाली हुई है | मणिपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने महिलाओं को इस जिम्मेदारी का अधिभार दिया है और आज महिलायें स्वयं ही इस दायित्व को निभाना अपना कर्तव्य मानती हैं |

मैयरा पायिबी एक परिचय

मैयरा पायिबी मणिपुर समाज में स्थापित एक परम्परा है, जिसका नेतृत्व मेतेई महिलायें करती हैं | मैयरा का अर्थ है- मशाल तथा पायिबी का अर्थ है उस मशाल को धारण करने वाली महिला |

समाजहित में मशाल धारण की हुई महिला को मणिपुरी भाषा में **मैयरा पायिबी** कहा गया है | मेतेई महिलाएं ये मशाल अकारण ही धारण नहीं करती, इसके पीछे वृहद् इतिहास है, जो मणिपुर की पहचान को अधिक व्यापक तथा ऐतिहासिक परिचय को और अधिक गौरवान्वित करती है |

मैयरा पायिबी नाम का सार्वजनिक रूप से स्थापित प्रचलन 1970 के दशक में शुरू हुआ, किन्तु जिन कारणों से मैयरा पायिबी की स्थापना हुई उसके पीछे मणिपुरी महिलाओं द्वारा पूर्व में किये गए समाज सुधार के अनेकों प्रयासों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है |

मैयरा पायिबी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

वास्तव में पहले मणिपुर में मैयरा पायिबी जैसी कोई व्यवस्था का नाम अस्तित्व में नहीं था | मणिपुर में भी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था ही विद्यमान थी | लेकिन सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता एवं राज्यजनित तंत्र के कारण प्राचीन काल से ही मैतेई महिलायें घर और घर के बाहर, दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई हैं |

घर चलाने के लिए पैसा कमाने से लेकर देश और समाज की राजनीतिक और प्रशासनिक गतिविधियाँ सही प्रकार से चलें, उसमें अपनी सक्रिय भागीदारी तक में मणिपुर की महिलाओं ने अपना असीमित योगदान दिया है | यहाँ तक कि आवश्यकता पड़ने पर युद्ध भी लड़े हैं | महिलाओं के उसी आंदोलनात्मक स्वरुप को आज मैयरा पायिबी के नाम से जानते हैं, जो हर गलत परिस्थिति और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का पुरजोर विरोध करती हैं |

मणिपुरी समाज में आज मैयरा पायिबी वह सामाजिक शक्ति है जिसने महिलाओं को उनका सम्मान दिलाया और सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता के लिए महिलाओं द्वारा किये गए प्रयासों का विश्व में उदाहरण प्रस्तुत किया |

शुरुआत में इस परम्परा के लिए **मैयरा पायिबी** की संज्ञा नहीं थी | किन्तु क्रिया रूप में यह परम्परा सदैव विद्यमान रही | मेतेई महिलाएं शाम को अपने पूरे गाँव की निगरानी के उद्देश्य से भ्रमण पर निकलती थीं | आपत्तिजनक तत्वों पर कठोरता से व्यवहार करती थीं | शराब पीते व्यक्ति पर जुर्माना करती थीं और शराब की दुकानों को बंद करवाती थीं | ना मानने पर शराब के भण्डारण में आग भी लगा देती थीं | उनका मकसद था उनके समाज से शराब को निकाल फैंकना | अंततोगत्वा मणिपुर में शराब को बंद कर दिया गया |

मणिपुर समाज में इस प्रकार के प्रयास निरंतर किये जाते रहे हैं | संभवत: यही कारण है कि आज भी मणिपुर प्रदेश में एक भी व्यक्ति भिक्षा मांगता नहीं दीखता | स्वावलंबन की संस्कृति का यह बीज मणिपुर की महिलाओं के प्रयासों द्वारा स्थापित इसी परम्परा की देन है जिसे आज सब मैयरा पायिबी के नाम से जानते हैं |

मणिपुर में सदा से ही महिलाओं ने सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई है | मैयरा पायिबी उसी का वर्तमान अंग है | उपलब्ध साहित्य और साक्ष्यों के आधार पर आधिकारिक रूप से इस सामाजिक परंपरा का प्रारम्भ थोउबाल जिले के ककचिंग नामक स्थान से हुआ |

अधोलिखित वर्णन, मणिपुर में इस सामाजिक परम्परा (मैयरा पायिबी) के ऐतिहासिक सम्बन्ध पर प्रकाश डालता है | जिसकी वृहदता इसके मूल विचार में है, जिसका सम्बन्ध मणिपुरी संस्कृति में मिलता है ना कि वर्तमान में बदले इसके आन्दोलन नुमा व्यवहार में | इसका स्वरुप वर्तमान में सीमित हो चला है | मणिपुरी महिलाओं द्वारा प्रारंभ इस परम्परा का आन्दोलनात्मक स्वरूप पहली बार 1970 के दशक में दिखता है, लेकिन यह आन्दोलन अचनाक हुआ प्रयास नहीं था | इसके पीछे वर्षों पहले जिस परम्परा की नींव पड़ी थी, उसका बल था |[i]

<u>लाल्लुप काबा से शुरुआत</u>

मणिपुर समाज में इस प्रकार की व्यवस्था/पद्धति/तंत्र विकसित थी जिसने महिलाओं को घर-परिवार की आर्थिक गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया | लाल्लुप काबा का प्रचलन मणिपुर में काफी पुराने समय से है | 18वीं शताब्दी से भी पहले मणिपुर में इस प्रकार का राज्यजनित तंत्र था जो महिलाओं को पुरुषों के दायित्व का अधिभार (या कहें आर्थिक स्वतंत्रता) परोक्ष रूप से सौंपता था | इस व्यवस्था को लाल्लुप-काबा के नाम से जानते हैं |

कमोबेश आज भी यह व्यवस्था अस्तित्व में है लेकिन इसका पालन नाममात्र के लिए केवल कुछ कलाकारों और पूजा कराने वाले ब्राह्मणों द्वारा करने तक सीमित रह गया है |

लाल्लुप जैसी राजव्यवस्था की अवधारणा यह है कि मणिपुर में 17 से 60 वर्ष की उम्र के सभी पुरुषों को प्रत्येक वर्ष उनके क्षेत्र से बाहर राज्य के अन्य क्षेत्रों में कुछ निश्चित दिनों के लिए बिना किसी पारिश्रमिक के अपना कुछ समय देना होता था या राजा के साथ युद्ध में भागीदारी होना होता था | युद्ध के दौरान पुरुष जीवित वापस आएगा अथवा नहीं, इसकी चिंता भी घर की महिलाओं को रहती थी क्योंकि घर पुरुषों से खाली हो जाता था, घर में महिलाओं के अलावा पुरुषों के नाम पर थे तो केवल घर के बुज़ुर्ग और बच्चे |

राजशाही के दौरान इस व्यवस्था के अंतर्गत जब घर के पुरुषों को लम्बे समय के लिए घर से बाहर रहना होता था तो घर की महिलाओं को ही घर-परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियां भी उठानी होती थीं | क्योंकि पुरुष बाहर जाने के बावजूद कुछ कमा कर नहीं लाते थे बल्कि घर वापस लौट कर शराब पीने के लिए भी पैसे घर की महिलाओं से माँगा करते थे अन्यथा हिंसा पर उतारू हो जाते थे | धीरे-धीरे महिलाओं ने स्वयं को इस दिशा में परिपक्व कर लिया |

वे अब घर की देखभाल के साथ-साथ बाज़ार में सामान भी बेचती थीं | अपने सामान को बेचने और ग्राहक द्वारा खरीदने के दौरान मोल-भाव भी होता था | इस प्रक्रिया ने महिलाओं को अधिक स्वावलंबी बनाया | महिलाऐं पुरुष-प्रधान समाज में भी अपनी बात रख सकती थीं, इस प्रकार का बल और साहस उनमें पैदा हुआ | इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि मणिपुर का प्रत्येक व्यक्ति महिलाओं का सर्वाधिक सम्मान करता है |

<u>महिलाओं का आर्थिक स्वावलंबन</u>

किसी भी व्यवस्था स्थायी अस्तित्व में आर्थिक स्वावलंबन विशेष स्थान रखता है, जिसके अभाव में निर्णय निर्धारण की क्षमता प्रभावित होती है | लाल्लुप काबा जैसी व्यवस्था ने महिलाओं को एकाकी अवश्य बनाया किन्तु आर्थिक रूप से मजबूत होने का एक विकल्प भी दिया |

इसी के फलस्वरूप व्यापार का एक बड़ा भाग महिलाओं के हाथों में भी आया और आर्थिक ज़िम्मेदारियां निभाने के लिए मणिपुर की महिलाओं ने छोटे-छोटे काम करना शुरू किये | जैसे मछली बेचना, घर में तैयार कपड़ा बेचना आदि |

उन्होंने धीरे-धीरे अपने लिए एक स्थान भी निश्चित किया, जहाँ केवल महिलाएं ही सामान बेच सकती थीं और उसका पूरा प्रबंधन भी महिलाओं के हाथों में ही था | जिस बाज़ार को मणिपुर की इमा (माताओं) ने खड़ा किया, वही मणिपुर की प्रमुख पहचान इम्फाल शहर के केंद्र में स्थित आज प्रसिद्ध 'इमा कैथल'[ii] (माताओं द्वारा लगाया गया बाज़ार) है | आज वहां सड़क के दोनों और इमा कैथल की दो मंजिला दो ईमारतें भी खड़ी हैं | जो मणिपुर की महिलाओं की समृद्धि और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है |

क्योंकि ये महिलाऐं स्वयं में आत्मनिर्भर हैं इसलिए इसी प्रकार की शिक्षा-दीक्षा आने वाली पीढ़ी को विरासत में घर से ही मिलती है | इसके लिए राज्य की सहायता प्राप्त करके अलग से किसी गुरुकुल की स्थापना नहीं करनी पड़ती |

लेकिन पुरुष की बढ़ती शराब की लत और बेकारी ने घर और समाज में महिलाओं का जीवन कठिन बना दिया था | जिसका बुरा असर बच्चों पर सीधे तौर पर पड़ता था | इसका अर्थ था- भावी पीढ़ी में संवेदनशीलता तथा संस्कारों की कमी और दूसरों का अपमान करने की भावनाओं को बल मिलना और ऐसा हुआ भी |

मणिपुर में महिलाओं का अहिंसात्मक विरोध प्रदर्शन

लाल्लुप काबा (व्यवस्था) का परिपालन मणिपुर के महाराज की आज्ञा से होता था, जिसमें मणिपुरी पुरुष अपने प्रदेश के सम्प्रभुत्व को बचाने हेतु अपना घर छोड़कर राजाज्ञा से प्रदेश की सुरक्षा के लिए बाहर जाते थे या राजधानी इम्फाल स्थित कंगला किले में सैन्य बल में जुड़ते थे | अंग्रेज़ मणिपुर पर 1891 तक कब्ज़ा कर चुके थे | इस दौरान मणिपुर के साथ लड़ाई में उन्हें भी नुक्सान पहुंचा था | 1902 के आसपास अंग्रेजों ने मणिपुर से पुरुषों को बर्मा (वर्तमान में म्यांमार) में अपने लिए घर बनाने के काम में लगाया | अंग्रेजों का कहना था कि मणिपुर के हमले से ही बर्मा में उनकी संपत्ति को नुक्सान पहुंचा है, जिसकी भरपाई मणिपुर को ही करनी होगी | इस काम में अंग्रेजों ने लाल्लुप काबा के तहत पुरुषों को बर्मा भेजने के लिए मणिपुर के महाराज से आदेश दिलवाया | यह सहयोग अंग्रेजों ने मणिपुर के तत्कालीन महाराज को सत्ता का लालच देकर प्राप्त किया था | मणिपुरी पुरुषों ने अपने राजा का आदेश मान कर इस कार्य को किया | लेकिन अंग्रेजों के साथ हुई सांठगाँठ की वास्तविकता पता लगने पर मणिपुरी महिलाओं ने इसका विरोध किया |

क्योंकि पुरुषों को बर्मा भेजा जा चुका था और राजा के सामने विरोध दर्ज कराने के लिए अब महिलाऐं ही थीं | उनका कहना था कि पुरुषों को लाल्लुप व्यवस्था के अंतर्गत अपने राष्ट्रहित में उपयोग करना चाहिए ना कि अंग्रेजी सत्ता के दबाव और लालच में आकर उनका दुरूपयोग कराया जाए | यह महिलाओं का इतिहास में दर्ज पहला विरोध प्रदर्शन है जो अपने ही रजा के विरुद्ध किया गया | यह विरोध परोक्ष रूप से ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ ही था, जो अनैतिक रूप से मणिपुरी सत्ता का दुरूपयोग कर रही थी |

नूपीलान : 1904 और 1939

सार्वजानिक जीवन में मणिपुरी महिलाएं हमेशा से ही प्रभावी रही हैं | 20वीं शताब्दी की शुरुआत के वर्ष 1904[iii] में हुआ यह युद्ध मणिपुर में महिलाओं की इस प्रकार की भूमिका का कोई पहला या शुरूआती मामला नहीं था | सन 1904 में अंग्रेज़ी सत्ता के विरुद्ध महिलोओं की यह लड़ाई मणिपुर के इतिहास में **नूपीलान** के नाम से दर्ज है |

नूपी अर्थात महिला और लान अर्थात लडाई | यह लड़ाई मणिपुरी पुरुषों को ज़बरदस्ती बर्मा में अंग्रेजों का गुलाम बनाकर भेजने के विरुद्ध मणिपुर के स्वाभिमान के हक़ में थी |

1939[iv] में ब्रिटिश सरकार के राज में जब महंगाई इस हद तक बढ़ गयी कि नमक और केरोसिन (मिट्टी तेल) जैसी सामान्य किन्तु आवश्यक वस्तुओं के लिए भी दाम आसमान छूने लगे और ब्रिटिश सरकार मणिपुर में उगा चावल असम भेज रही थी | स्कूल बंद थे, पूरा इम्फाल छावनी में तब्दील हो गया था | सरकार और कानून नाम की कोई चीज़ नहीं था | दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था | ऐसे में एक बार फिर महिलाओं ने ही इस अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठाई | अंग्रेजों से संघर्ष के दौरान कई महिलाएं गंभीर रूप से घायल भी हो गयीं थीं | मणिपुर में **1904 और 1939** में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ के दो ऐतिहासिक युद्धों में मेतेई महिलाओं की भागीदारी ने इतिहास में उन्हें और विशेष बना दिया | इसी लिए इसे नूपीलान यानि महिलाओं का युद्ध कहा जाता है | आज इम्फाल शहर के बीचों बीच **नूपीलान ऐतिहासिक स्मारक** भी है | प्रत्येक वर्ष 12 दिसम्बर को **नूपीलान दिवस** के रूप में मनाया जाता है |

लगभग सभी सामाजिक आंदोलनों में मणिपुरी महिलाएं सक्रिय रूप से भागीदार रही हैं | मणिपुर में भ्रमित नीतियाँ बनाने वाले और उनका क्रियान्वयन करने वालों के खिलाफ मणिपुरी महिलाओं ने कई बार मोर्चा खोला है |

<u>निशाबंदी और समाज सुधार</u>

लाल्लुप काबा जैसी व्यवस्था ने जहाँ एक ओर महिलाओं को आत्मनिर्भर बना दिया, वहीं पुरुष समाज की कई बुराइयों को भी उजागर किया | मणिपुर के युवा ड्रग्स, नशीली दवाएं, शराब आदि की लत में फंसे हुए थे | जिसके कारण मणिपुर में अपराध की घटनाएं, घरेलू हिंसा, लैंगिक हिंसा जैसी सामाजिक अव्यवस्थायें बढ़ती ही जा रही थीं | ऐसे में जिन महिलाओं ने घर परिवार को सँवारने की जिम्मेदारी संभाली हुई थीं, वही महिला अपने पति-बच्चों और घर के पुरुषों को समाज में अशांति कैसे फैलाने दे सकती थी | पारंपरिक रूप से महिलाएं पहले से ही सशक्त थीं, दब्बू नहीं थी | इसलिए यह उत्तरदायित्व भी उन्होंने स्वयं ही संभाला | यहाँ ये उल्लेखनीय है कि उस समय में पुरुष द्वारा शराब पीना, घर में क्लेश करना, पत्नी और बच्चों से मारपीट-गाली-गलौच प्रतिदिन की बात हो चली थी |

ऐसे में घर की महिलाओं का जीवन दूभर था | बच्चों में नकारात्मक व्यवहार बढ़ रहा था | जब वे घर में महिलाओं को पिटते हुए देखते थे तो बड़े होकर वे भी इसकी पुनरावृत्ति करते थे | यह नकारत्मक प्रवृत्ति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में विरासत की भांति जा रही थी |

ऐसे में महिलाओं की पीड़ा महिलाओं ने ही समझी | घर में जो महिला 45-50 वर्ष की थीं, उन्होंने पुरुषों के इस व्यवहार के प्रतिरोध का बीड़ा उठाया | ये वे महिलाएं थीं जो रोज़ अपने घर में बहु-बेटियों पर अपने बेटे या दामाद द्वारा अत्याचार होते देखती थीं |

मणिपुर के थोउबाल जिले में ककचिंग[v] नामक स्थान से निशाबंदी का पहला प्रयास सामने आया | किसी एक महिला की पहल पर इस प्रकार की शुरुआत हुई | गाँव की महिलाएं एक स्थान पर एकत्रित होने लगीं | ये महिलायें घरों से पैदल ही निकलती थीं और गाँव के हर छोर का निरीक्षण करती थीं | कोई पुरुष यदि शराब पीता, जुआ खेलता, घर में अपनी पत्नी और बच्चों से मारपीट या गाली-गलौच करता हुआ मिलता था तो उसका विरोध करती थीं | पीड़िता को बचाती थीं | शराबी व्यक्ति की सार्वजनिक रूप से निंदा करती थीं ताकि लज्जित होने के भय से वह मदिरा सेवन का त्याग करे | इतने पर भी शराब पीता व्यक्ति यदि नहीं मानता था तो उसे दण्डित करती थीं, आवश्यकता अनुसार अधिक दंड देने के लिए उस पर जुर्माना भी लगाती थीं और भविष्य में दुबारा ऐसा ना करने की सलाह देते हुए, बाहर शराब पीते पुरुष को घर तक छोड़कर आती थीं | महिलाओं के विरोध का यह तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण था |

इस अभियान का असर इतना प्रभावी हुआ कि पहले जो महिला पुरुष के हाथों बिना किसी अपराध पर पिटती थी, प्रताड़ित होती थी, अब वह घर में उत्पात मचाते उस शराबी पति का विरोध करने का साहस करने लगी | पति शराब पीकर घर में ना आए इस हेतु उसे सावधान करने लगी | ककचिंग के एक छोटे से गाँव से शुरू हुई यह कोशिश जब सफलता की सीढियां चढ़ने लगी तो शनैः-शनैः आस-पास के गाँवों में भी यह प्रयास किया गया | सफलता की गाथाएं बढती गयीं, पूरे राज्य में अपने गाँव को नशामुक्त, अपराधमुक्त और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिलाएं संगठित होती गयीं | पूरे मणिपुर में सकारात्मक परिणाम मिलते गए |

इसके अतिरिक्त स्थान-स्थान पर, मणिपुर में स्थानीय बनी शराब को ज़ब्त कर व्यापक स्तर पर सार्वजनिक रूप से सबके सामने नष्ट किया जाने लगा | इसी के बाद से इन महिलाओं को निशाबंदी कहा जाने लगा |

निशाबंदी के इन निरंतर प्रयासों का ही परिणाम था कि 1990 में मणिपुर को निशा रहित (Dry state) राज्य घोषित किया गया | आज मणिपुर का प्रत्येक व्यक्ति महिलाओं को सर्वोच्च सम्मान देता है |

<u>निशाबंदी से मैयरा पायिबी : विकासयात्रा में नाम परिवर्तन</u>

निशाबंदी ने शराब बंद और पुरुषों के अनुचित व्यवहार के विरुद्ध आवाज़ उठाने का काम किया | लेकिन जब इनकी गतिविधियों का दायरा बढ़ा और विरोध के दायरे में सरकार और सेना भी आने लगे तो सरकार और सेना के प्रति अपना विरोध दर्ज कराने के लिए महिलाओं ने अलग उपाए अपनाए | 18वीं शताब्दी से पुरुषों के लाल्लुप में जाने के बाद मेतेई महिलाओं के हाथों में (विशेषकर आर्थिक विषयों में) जो व्यवस्था आई, उसी का परिणाम निशाबंदी के रूप में सामने आया, जिसका वर्तमान रूप **मैयरा पायिबी** है |

मणिपुर की महिला नूपीलान की योद्धा भी है, निशाबंदी भी है और मैयरा पायिबी भी | वह घर भी संभालती है और सार्वजनिक जीवन में भी उतनी ही सक्रिय है | संकट के समय में ये पारस्परिक रूप से स्वयं ही संगठित हो जाती हैं | फिर चाहें संकट घर और लैकाई में हो या देश में | परिवर्तन की इस यात्रा में निशाबंदी से मैयरा पायिबी की भूमिका में आने का समय 1980 के आस-पास है जब मणिपुर में अफ्स्पा (आर्म फोर्सेज स्पेशल पॉवर एक्ट) लागू किया गया |

मैयरा पायिबी के पहले प्रयास के विषय में इमा जानकी लैयमा बताती हैं कि- “ककचिंग के एक गाँव में बुज़ुर्ग महिलायें आपस में तय करके गाँव भर में निरीक्षण पर निकलीं | शाम के समय अँधेरा अधिक हो गया था इसलिए बांस का एक-हाथ बराबर टुकड़ा, उसमें ऊपर मिटटी तेल से भीगा कपड़ा रखकर जला लिया, जिसे **मैयरा** यानि **मशाल** कहा जाता है | सभी महिलाएं अपने घर से बांस का टुकडा लेकर और उसमें ऊपर से मिट्टी के तेल (केरोसिन) में सना कपड़ा लगाकर एक मशाल बनाती थी | मणिपुर में इसी मशाल को मैयरा कहते हैं और **इस मशाल को धारण करने वाली महिला को मैयरा पायिबी कहते हैं |** यहीं से मैयरा पायिबी अवधारणा का जन्म हुआ | लेकिन इस परिवर्तन से उनकी गतिविधियों में कोई अंतर नहीं आया बल्कि कार्यक्षेत्र बढ़ गया | जो प्रयास पहले दिन के समय तक सीमित थे, सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से अब रात में भी ये महिलाएं मशाल लेकर घर से बाहर निकलने लगीं, साथ में अन्य महिलाओं को भी एकत्रित करती थीं | इस गश्त के दौरान यदि कोई व्यक्ति शराब पिए, उत्पात मचाते हुए या घर में क्लेश करते हुए पाया जाता था तो इन महिलाओं द्वारा दण्डित किया जाता था, साथ ही सार्वजनिक रूप से उसकी निंदा की जाती थी ताकि भविष्य में वह ऐसा न करे | इस प्रकार मैयरा पायिबी की शुरुआत हुई | ये वास्तव में वही व्यवस्था है जो 18वीं शताब्दी में विद्यमान थी |

<u>गृहणी से मैयरा पायिबी बनने तक का सफ़र</u>

ए.के. जानकी लेयमा ने टाइम्स ऑफ़ इंडिया को दिए अपने साक्षात्कार में बताया था कि 'हम ड्रग्स व्यसन, शराब और महिलाओं के प्रति अपराध के खिलाफ संघर्षरत हैं | हालाँकि मेतेई समाज पुरुष प्रधान समाज है फिर भी महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं | मणिपुर में राजशाही के दौरान भी जब पुरुष युद्ध में बाहर जाते थे तो महिलाएं उनकी जगह लेती थीं, घर भी वही चलाती थीं, व्यापार भी वही संभालती थीं, पैसों का लेन-देन आदि सब महिलाओं के हाथों में ही रहता था |"

मणिपुर में दसवीं कक्षा में मैयरा पायिबी का गलत इतिहास पढ़ाये जाने को लेकर इमा रमानी देवी ने विरोध दर्ज करते हुए कहा था मैयरा पायिबी परम्परा आज शुरू नहीं हुई | इसकी यात्रा बहुत लम्बी और सतत है |[vi]

इससे निष्कर्ष यह कि मणिपुर में महिलाएं प्रारंभ से ही समाज के हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं | वे घर की चौखट तक सीमित नहीं रहीं बल्कि घर की दहलीज़ के बाहर कदम रखकर सार्वजनिक जीवन से सरोकार का भी अवसर मिला | अमूमन जो दायित्व मुख्य रूप से पुरुषों के ही हाथों में रहता था उस रूढ़िवादिता को पाटकर उन्हें सम्मानपूर्वक मुख्यधारा की गतिविधियों में शामिल किया गया |

<u>मैयरा पायिबी के कार्य की दिशा में बदलाव</u>

भविष्य में एक घटना घटी जिसने मणिपुर की सभी परिस्थितियों और मैयरा पायिबी आन्दोलन की दिशा दोनों को बदल दिया | वर्ष 1980 के मई माह के तीसरे सप्ताह की घटने है | पश्चिम इम्फाल जिले के लान्गजिंग गाँव के PREPAK के लोगों द्वारा केन्द्रीय सुरक्षा बल (सी.आर.पी.एफ) के दो जवानों को छोटी पहाड़ी पर लगे एक कैम्प में मार डाला गया | जवाबी कार्यवाही में सेना ने तलाशी अभियान शुरू किया | सेना के जवान गाँव में PREPAK संगठन के लोगों को ढूँढने लगे | लोगों को घंटों तक हाथ ऊपर करवाकर खड़ा किया गया | इस दौरान हाथापाई में एक महिला की जान भी चली गयी | परिस्थितियाँ सुधरने की बजाये और बिगडती चली गयीं | लगातार असामान्य होती स्थिति को देखते हुए मणिपुर को अशांत प्रदेश घोषित कर दिया गया | 1958 एक्ट के तहत राज्य में सन 1980 के सितम्बर माह में अफ्स्पा **(AFSPA-Arm Forces Special Power Act, 1958)** लागू कर दिया गया | जिसके तहत संदेह मात्र होने पर सेना का अनाधिकृत अधिकारी भी शंकास्पद व्यक्ति को गिरफ्त में ले सकता था, मार सकता था या गोली तक चला सकता था |

अफ्स्पा अधिनियम 1958 और मैयरा पायिबी की गतिविधियाँ

मैयरा पायिबी परम्परा की शुरुआत हुई थी ग्राम सुधार के साथ ताकि मेरा घर-परिवार, गाँव-समाज और देश सभ्य-सुसंस्कृत और सुरक्षित रहे | लेकिन समय के साथ घटती घटनाओं ने कई बदलावों और व्यवधानों को जन्म दिया | 8 सितम्बर, 1980 को मणिपुर में अफ्स्पा लागू होने के बाद से इस सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन के संघर्ष का फलक और अधिक बढ़ गया था तथा स्वरुप बदल गया था |

यहीं से मैयरा पायिबी परम्परा की संगठनात्मक रूप से शुरुआत होती है | इससे पहले यह परम्परा समाज के अन्दर व्यवहारिक रूप में विद्यमान थी, जिसका आवश्यकता पड़ने पर लोग पालन करते थे, आज पंजीकृत संगठन इसमें कार्यरत हैं | ये संगठन उन्हीं महिलाओं द्वारा बनाये गये हैं जो समाज सुधार के कार्य में पूर्व से ही सक्रिय थीं |

मणिपुर में जब से अफ्स्पा अधिनियम 1958 लागू किया गया तब से मणिपुरी पुरुषों के लिए अधिक समस्याएँ खड़ी हुईं | क्योंकि इस अधिनियम में ऐसा प्रावधान है कि किसी भी व्यक्ति पर संदेह मात्र होने पर उसे गिरफ्तार कर लिया जाये, यदि प्रत्युत्तर में कोई प्रतिकूल प्रतिक्रया हो तो गोली भी मार दी जाये , शंका होने पर किसी भी घर की तलाशी ली जा सके, ऐसी छूट सेना को दी जाती है | इस शक्ति के तहत सेना द्वारा कुछ निर्दोष लोगों पर भी कार्रवाई की गयी, इस कारण के साथ मैयरा पायिबी समूहों ने सेना के खिलाफ भी मोर्चा खोला |

मैयरा पायिबी समाज की दृष्टि में सरकार द्वारा यह अधिनियम मणिपुर में ज़बरदस्ती लागू किया गया | जिसने कई निर्दोष मणिपुरी नौजवानों की जान ले ली | उन निर्दोष लोगों को बचाने के लिए ही पूरे मणिपुर की मैयरा पायिबी एकजुट हुई हैं |

मणिपुर में राज्यजनित अत्याचार, मानवाधिकारों का हनन जैसी समस्यायें बढ़ने लगीं, सशस्त्र आक्रामकता बढ़ने लगी तो उनके पास विरोध करने के लिए महिला एकत्रीकरण के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं था |

अफ्स्पा 1980 में मणिपुर में लागू किया गया था | उसके बाद से सेना के द्वारा निर्दोष लोग ना मारे जाएँ, इसके लिए अपनी परम्परा के अनुसार ही मैयरा पायिबी रात में भी सड़कों पर निकलती हैं | सेना द्वारा चलाये जाने वाले तलाशी अभियानों में निर्दोष को गिरफ्तारी से बचाने, महिलाओं से दुर्व्यवहार होने से रोकने के लिए ये मैयरा पायिबी समूह सुरक्षा कवच की भूमिका निभाती हैं |

जुलाई 2004 में पूरे विश्व में मैयरा पायिबी आन्दोलन की चर्चा हुई | असम राइफल्स के जवानों की गिरफ्त में थान्ग्जम मनोरमा देवी नाम की युवती की बलात्कार कर हत्या कर दी गयी | इसकी प्रतिक्रिया में मेतेई महिलाओं ने अब तक का सबसे कठोरतम विरोध प्रदर्शन किया था | इम्फाल में 15 जुलाई 2004 को 12 मैयरा पायिबी महिलाओं ने 17वीं असम राइफल्स के मुख्यालय के सामने स्वयं को निर्वस्त्र करके जिस बैनर के साथ प्रदर्शन किया, उस पर लिखा था 'इंडियन आर्मी रेप अस' (भारतीय सेना हमारा बलात्कार करो)।[viiviii] सेना के विरुद्ध महिलाओं का नग्न प्रदर्शन महिलाओं द्वारा किये गए विरोध की उच्चतम सीमा को दिखाता है | इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि महिलाओं के खिलाफ अत्याचार को मणिपुर में किसी भी रूप में बर्दाश्त नहीं किया जाता |

इम्फाल पूर्वी जिले के बामोनकाम्पू की निवासी मनोरमा देवी की 11 जुलाई, 2004 की सुबह बलात्कार के बाद हत्या तथा इसी प्रकार संजीता और राबिना देवी के साथ भी किया जाना, सेना की क्रूरतम और असैन्य बर्ताव को दर्शाता है | राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह घटना लम्बे कालखंड तक सुर्ख़ियों में बनी रही थी | इसके ज़ख्म हर मणिपुरी के मन में आज भी ताज़ा हैं |

मैयरा पायिबी की प्रमुख ध्वज्वाहिका 86 वर्षीय इमा थोकचोम रमानी देवी ने बताया था कि "1980 में अफ्स्पा के लागू होने के बाद से सेना अपनी अतिरिक्त शक्तियों का दुरूपयोग करते हुए लोगों के मानवाधिकारों का भी हनन करती है | नौजवानों को निरुद्देश्य उठा लेना, महिलाओं के साथ बलात्कार करना और संदेह होने मात्र पर निरापराध लोगों को मार देना सेना की गतिविधियों का स्थायी हिस्सा बन चुका था | इस प्रकार प्रदर्शन करने का इतना कठोर निर्णय हमने इसलिए लिया क्योंकि हमें आभास होने लगा था कि सेना के अफसर अफ्स्पा अधिनियम (1958) के तहत ताक़तों का दुरूपयोग करने लगे हैं | वास्तव में उन्हें जवाबदेही का कोई डर नहीं रह गया था |"

मैयरा पायिबी का यह आन्दोलन उग्र इसलिए भी था कि सेना जिन माताओं के बच्चों को मात्र संदेह के बल पर गिरफ्त में लेती थी, उन्हें सेना द्वारा तरह-तरह की यातनाएं दी जाती थीं | उनके शरीर पर आई चोटों के ज़ख्म इतने गहरे और गंभीर होते थे कि उनमें सड़न पड़ने लगती थी | कई बार तो वह एक प्रकार का कैंसर बन जाती थी | सेना द्वारा इस प्रकार की अमानवीयता सामने आने पर ही इमाओं (माताओं) ने सेना के खिलाफ खड़ा होने का निर्णय लिया | जो उनके बच्चों को निर्दोष होने पर भी प्रताड़ित करते थे |

1980 में अफ्स्पा के लागू होने के बाद से मैयरा पायिबी आन्दोलन का सर्वाधिक हस्तक्षेप अफ्स्पा के खिलाफ ही रहा है | बिना अपराध साबित हुए ही युवकों को प्रताड़ित करने, उन्हें चोट पहुँचाने के खिलाफ मणिपुर की इमाओं (माताओं) ने मैयरा पायिबी की पूरी शक्ति का उपयोग करते हुए सेना से यह बात मनवाई कि संदेह के आधार पर हिरासत में लिए गए लोगों को मात्र अकारण किसी प्रकार की चोट ना पहुंचाई जाए | किन्तु ये मैयरा पायिबी महिलाएं इस बात पर भी सहमत थीं कि यदि हिरासत में लिए गए लोगों पर यदि अपराध या आरोप साबित होते हैं तो कानून के अनुसार कार्रवाई की जाये और कानून सम्मत सजा दी जाये | लेकिन अकारण ही सेना द्वारा उनपर अत्याचार ना किये जाएँ |

<u>सैन्य ताकतों का विरोध और मैयरा पायिबी संगठनों का निर्माण</u>

29 दिसंबर 1980 को इबोमचा लैशराम को उग्रवादी तत्वों से सम्बन्ध होने के शक में पकड़ लिया गया था | इसके प्रत्युत्तर में मैयरा पायिबी समाज द्वारा प्रतिक्रियात्मक पहल हुई | सभी महिलाएं रात में इकट्ठी हुई और मशाल लेकर मार्च करते हुए पुलिस स्टेशन तक गयीं और दबाव बनाकर इबोमशाह को छुड़ाया |[ix] संभवत: इस प्रकार का यह पहला आन्दोलनकारी कदम था | जिसने मैयरा पायिबी के सोच की दिशा बदल दी, कार्य करने का दायरा बढ़ा दिया जो साहस पहले स्थानीय लोगों के शराब पीने-घरेलू हिंसा के विरोध तक सीमित था, वह सोच अब सेना द्वारा किये जाने वाले शक्ति के दुरूपयोग के विरोध तक विस्तृत हो गया था |

महिलाओं के जिस समूह ने इबोम शाह को छुड़ाया था उन्होंने 1980 में ही इमा चाओबी के नेतृत्व में 'All Maniur Women's Reformation & Development Samaj" नाम से संगठन का निर्माण किया | यह संगठन मणिपुर में मैयरा पायिबियों के सबसे पहले और पुराने समूह में से है |

एक और घटना हुई | सेना की कार्रवाई और अधिक क्रूर और निंदनीय होती जा रही थी | 1980 में ही महिलाओं के समूह अफ्स्पा के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे | इन सभी प्रदर्शनकारियों को ट्रक में भरकर ले जाया जाने लगा | इसी दौरान एक गर्भवती महिला ट्रक से गिर गयी और उसकी मृत्यु हो गयी |इस घटना के बाद प्रदर्शन और अधिक तेज हुआ | उन्हीं प्रदर्शनकारी महिलाओं के समूह ने इमा तोम्बी के नेतृत्व में पोइरेइ लेइमारो (Poirei Leimaro) नाम से संगठन खड़ा किया |इस प्रकार से आज तक मैयरा पायिबी की सोच के साथ अनेकों संगठन खड़े हो चुके हैं | जो मुख्य रूप से केवल और केवल अफ्स्पा को हटाने की ही आवाज़ उठाते रहे हैं |

मैयरा पायिबी का कार्य एवं उसकी स्वीकार्यता

हर बार सामाजिक बुराईयों को दूर करने में मणिपुर की महिलाओं की मुख्य भूमिका प्रमुख रही है | घर की दहलीज़ तक सिमटी महिलाओं ने एकजुट होकर गाँव की महिलाओं को एकत्र किया, एक समूह बनाकर सभी पायिबी (महिलाएं) रात में मैयरा अर्थात मशाल लेकर अपने गाँव का चक्कर लगाती थीं | अपनी लैकाई (गली या इलाके) की निगरानी करती थीं और उपद्रवी तत्वों की पहचान करती थीं | ताकि कोई व्यक्ति उस इलाके में या अपने घर में भी उत्पात ना मचाये | महिलाओं द्वारा शुरू की गयी इस पहल की समय के साथ स्वीकार्यता और उपद्रवी तत्वों में भय की भावना बढ़ती गयी | मणिपुर की महिलाएं इस प्रकार राज्य में शांति निर्माण और व्यक्तित्व विकास दोनों प्रकार के कार्य कर रही थीं |

आज मैयरा पायिबी मणिपुर की प्रत्येक बस्ती में मौजूद है | मणिपुर में मणिपुरी पुलिस पुरुषों के साथ दुर्व्यवहार कर सकती है लेकिन महिलाओं के साथ नहीं | मणिपुर में महिलाओं को यह सम्मान मैयरा पायिबी नामक शक्ति की ही देन है |

मैयरा पायिबी के उद्देश्य और कार्य पद्धति

मैयरा पायिबी पूरे विश्व के लिए एक सशक्त उदहारण पेश करती हैं कि लोकहित में आवाज़ उठाने और जनहित में कार्य करने के लिए महिलाओं की सक्रिय भागीदारी उनके बच्चों, भावी पीढ़ियों और पूरे समाज को संवारने के लिए विशेष स्थान रखती हैं |

शराब पीना, जुआ खेलना, ड्रग्स का सेवन, लडाई-झगड़ा आदि ऐसे बर्ताव जिन्हें करना पुरुष अपना शौक और रूआब समझता था, इसका इन महिलाओं ने विरोध किया और विरोध करने का तरीका अब तक के सभी उपायों से भिन्न था |

महिलाओं के विरोध का यह तरीका नितांत शान्तिपूर्ण था | समय के साथ जैसे-जैसे विकास होता गया, मणिपुर में कई तरह के बदलाव देखने को मिले | सालों के प्रयास और संघर्ष ने मणिपुर की महिलाओं को सशक्त बनाया | महिलाओं की आवाज़ को सुना जाने लगा | उन्हें सम्मान दिया जाने लगा |

ऐसा नहीं है कि पहले महिलाओं का सम्मान नहीं था, किन्तु अब महिलाओं की क्षमता पर प्रश्न नहीं उठते | मणिपुर की महिलाएं उग्रवाद, गरीबी, बेरोज़गारी, शराब, सीमा सुरक्षा और प्रजाहित के प्रति राज्य की उदासीनता के खिलाफ़ कई दशकों से मोर्चा खोले हुए हैं | और अपनी बात रखने का तरीका हमेशा अहिंसात्मक ही रखा है |

<u>मैयरा पायिबी की सांगठनिक व्यवस्था एवं फैलाव</u>

वास्तव में मैयरा पायिबी के नाम से कोई संगठन मणिपुर में पंजीकृत नहीं है | अपितु यह एक विचार है, जिससे जुड़कर जो लोग काम करते हैं | अपने इलाके के अनुसार मैयरा पायिबी के विचार तले लेकाई (मोहल्ला) तथा प्रदेश स्तरीय संगठनों का निर्माण कर लेते हैं | लेकाई स्तरीय अधिकतर संगठनों का नाम मोहल्ले के नाम पर ही पंजीकृत हैं | उदाहरणार्थ **"बामोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन"** इम्फाल पूर्व जिले के मयाई लेकाई, बामोनकाम्पु स्थान में मैयरा पायिबी विचार तले महिलाओं के लिए काम करता लेकाई स्तरीय संगठन है |

इसी प्रकार राज्य स्तरीय मैयरा पायिबी संगठनों का भी पंजीकरण होता है, लेकिन उसमें पूरे मणिपुर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता होनी चाहिए | इस स्तर का एक संगठन है- **"ऑल मणिपुर वीमेनस रिफोर्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज" |** जिसे **'नूपी समाज'** भी कहते हैं |

इस प्रकार के, मणिपुर में मैयरा पायिबी विचार के अंतर्गत आज कई संगठन पंजीकृत हैं | और अनेकों संगठन बिना पंजीकरण के भी इस सामाजिक-सांस्कृतिक प्रवाह में अपना श्रम दे रहे हैं, लेकिन फिर भी ये गैर-पंजीकृत संगठन अपने नेतृत्व से जुड़े हुए हैं अर्थात पंजीकृत संगठनों से इनका सीधा संपर्क रहता है | समूचे मणिपुर में पंजीकृत और गैर-पंजीकृत मैयरा पायिबी संगठनों की उपस्थिति बहुत बड़ी संख्या में देखी जा सकती है |

आज राजधानी इम्फाल में जहाँ सिटी कन्वेंशन सेंटर है, वहां पहले मैयरा पायिबी के सबसे पहले और पुराने संगठन **'नूपी समाज'** का प्रमुख कार्यालय हुआ करता था | अब पैलेस कम्पाउंड में राजा भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर काम्प्लेक्स के सामने एक ईमारत की तीसरी मंजिल के एक ही हॉल में इस संगठन की कई महिलाएं रहती हैं | वहीं खाती और सोती हैं | मणिपुर मैयरा पायिबी के सबसे पुराने संगठन का कार्यालय आज इसी कमरे से चलता है |

मैयरा पायिबी एक विचार है जिसकी नींव सैकड़ों वर्ष पहले पड़ी थी किन्तु एक नाम के साथ संगठन के रूप में इसकी शुरुआत सन 1977 में हुई | हर वर्ष **28 दिसम्बर** को मैयरा पायिबी दिवस मनाया जाता है |

मणिपुर के मैयरा पायिबी समाज ने देश के अन्य ऐसे संगठनों के साथ मिलकर काम करने की भी योजना बनायी थी लेकिन धन की कमी और सांगठनिक असहयोग के कारण कश्मीर और अन्य प्रदेशों में कार्यरत ऐसे संगठनों से एकजुटता नहीं हो पाई |[x]

<u>मैयरा पायिबी की वर्तमान ध्वजवाहक</u>

भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर काम्प्लेक्स के सामने जिस ईमारत की तीसरी मंजिल के एक हॉल में 'नूपी समाज' संगठन की महिलाएं रहती हैं | उनमें से एक हैं उनकी नेतृत्वकर्ता इमा रमानी देवी | इमा (माँ) रमानी देवी 88 वर्ष की हैं और आज भी उसी बल और गंभीरता के साथ अपने उद्देश्यपूर्ति हेतु प्रयासरत हैं जिसकी शुरुआत उन्होंने नूपी समाज की स्थापना से साथ की थी |

मैयरा पायिबी विचारगर्भित संगठन बनना, सन 1980 के दौरान शुरू हुआ जबकि **नूपी समाज** 1973 में पंजीकृत हुआ था | लेकिन इमा रमानी देवी उससे भी पहले से मणिपुर को नशामुक्त, अपराधमुक्त बनाने के लिए प्रयासरत हैं | जब काम बनते गए और कारवां बढ़ता गया तब इन्होंने इस संगठन **'नूपी समाज'** की नींव रखी | 26 जून 2016 को इस संगठन का 40वां स्थापना दिवस मनाया गया है |

निशाबंदी कहो या मैयरा पायिबी, ये महिलाएं वही हैं जो मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक संप्रभुता के लिए जीवन भर प्रयासरत रही हैं और उनका यह प्रयास सतत चलता रहेगा |

इमा रमानी देवी कहती हैं कि "मणिपुर जैसे धार्मिक प्रदेश में जहाँ लोग भगवन श्रीकृष्ण की भक्ति करते हैं, वहां से केवल एक बार अफ्स्पा हटाकर दो-तीन महीने के लिए प्रयोग करके तो देखें कि शांति भंग होती भी है या नहीं | या फिर अफ्स्पा ने ही हम मणिपुरियों को अशांत किये हुआ है | कम से कम एक बार तो यह उपाय करके परखना चाहिए | यदि इसके बिना शांति नहीं बनी रहे, तो बेशक अफ्स्पा फिर से लागू कर दिया जाए लेकिन शांति के लिए हमारी बात को एक बार तो मौका दीजिये |"

मैयरा पायिबी की एक और बड़ी नेता फनजोउबम ओन्गबी सखी देवी कहती हैं कि "आज की परिस्थिति यह है कि रात में लोग केवल इस भय से नहीं सो पाते कि रात को आर्मी के लोग आकर दरवाज़े पर दस्तक देंगे | और हमारे बच्चों को उठा कर ले जायेंगे | उनकी (सेना की) क्रूरता की सीमायें नहीं होतीं | वे कहती हैं कि जब हम युवा अवस्था में थे तब सेना और पुलिस से हमें सुरक्षा और सौहार्द का वातावरण मिलता था | हमारा उनपर मातृत्व-सा स्नेह था | लेकिन आज वे हमसे गैरों की तरह व्यवहार करने लगे हैं | हम मानते हैं कि इसमें गलती केवल उनकी नहीं है | लेकिन ये मारकाट, महिलाओं के साथ बलात्कार ऐसा क्यों किया जा रहा है ? आज हमारा मातृत्व प्रेम भी उन पर से खत्म हो चुका है |"[xi]

बीबीसी संवाददाता दिव्या आर्या ने इम्फाल से लौटकर 17 अप्रैल 2014 को अपनी रिपोर्ट में कहा था "मणिपुर में 25-30 वर्ष की ऐसी सैकड़ों विधवाएं हैं जिनका आरोप है कि सेना और मणिपुर पुलिस ने उनके पति को अलगाववादी बताकर फ़र्ज़ी एनकाउंटर में मार दिया" |[xii]

<u>मैयरा पायिबी समाज की संचार व्यवस्था</u>

मैयरा पायिबी के अंतर्गत गली-मोहल्ले (लेकाई) से लेकर प्रदेश स्तर तक जितने भी संगठन हैं वे पंजीकृत हों या ना हों लेकिन आपस में संगठित अवश्य हैं |

आज की भांति जब फ़ोन नहीं था, संचार का कोई दूसरा सरल-सहज उपलब्ध माध्यम नहीं था तब भी मैयरा पायिबी की संचार व्यवस्था उतनी ही दुरुस्त थी जितनी आज सभी आधुनिक संसाधन उपलब्ध होने पर है |

सूर्यास्त के पश्चात अपने-अपने इलाकों में महिलाएं एक स्थान पर एकत्र होती थीं | और एक किनारे बैठ कर उपद्रवी तत्वों पर नज़र रखती थीं | महिलाओं को कोई आपत्तिजनक तत्व नज़र आता या उन्हें कोई खतरा महसूस होता तो वे नजदीक रखी लालटेन (लैंप लाइट) को पत्थर से बजाती थीं ताकि उससे होने वाली आवाज़ सुनकर आसपास के लोग (महिला, पुरुष, युवा आदि) उनके सहयोग के लिए तुरंत आ जाएँ |

ये महिलाएं गाँव भर का घर-घर जाकर निरीक्षण करती थीं, शरारती तत्वों जैसे शराबी, जुआरी, उत्पाती, घर में पत्नी-बच्चों से मारपीट करते व्यक्ति ऐसा करने पर रोकती थीं, अधिक होने पर उन पर जुर्माना लगाती थीं और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें दण्डित भी करती थीं |

मैयरा पायिबी संगठनों की आतंरिक संचार व्यवस्था और संघटन (लामबंदी) बहुत ही उम्दा है | आज की तरह सुविधाएँ उपलब्ध ना होने पर भी जिस प्रकार पहले मैयरा पायिबी महिला खतरा होने पर लालटेन को पत्थर मारकर बजाती थी ताकि आसपास के लोग एकत्रित हो जाएँ, उसी प्रकार आज भी सेना द्वारा तलाशी अभियान के दौरान यदि किसी भी मैयरा पायिबी को यह मालूम पड़ जाये कि सेना उनकी लेकाई में तलाशी अभियान के लिए आने वाली है, तो वह महिला अपने घर के निकट के बिजली के खम्बे पर पत्थर से चोट करके जोर से बजती है | जिससे आवाज़ सुनकर सभी महिलाएं अपने घरों से निकलकर एक जगह एकत्रित आ जाएँ और अकारण ही सेना के लोगों को घर में घुसने से रोक सकें | समाजहित में सामान्य सी संचार पद्धति का कितने मजबूत ढंग से परिपालन किया जाता है इसका उदहारण मैयरा पायिबी के इस प्रयास से मिल जाता है |

राजनीतिक दृष्टि से मैयरा पायिबी की महत्ता

मणिपुर में मैयरा पायिबी समाज राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है | चुनावों के दौरान राजनीतिक जागरूकता फैलाने में मैयरा पायिबी के नेटवर्क (संपर्क) की मदद ली जाती है |[xiii] मणिपुर में मैयरा पायिबी की शक्ति और प्रभाव का आकलन इससे लगाया जा सकता है कि यदि चुनावों के दौरान इन्हें हर क्षेत्र और हर कोने में जांच की जिम्मेदारी दे दी जाये तो यह तय है कि खरीद-फरोख्त और चुनावी समय में होने वाली असंवैधानिक गतिविधियों पर काफी हद तक रोक लगायी जा सकती है |

आज स्थिति इस प्रकार है कि मणिपुर में मैयरा पायिबी एक विशाल और शक्तिशाली संगठन है जो हर परिस्थिति में मणिपुर में जनमत बदलने में पूर्ण रूप से सक्षम है |

86 वर्षीय वरिष्ठ मैयरा पायिबी इमा रमानी देवी कहती हैं कि राजनीति हर वर्ग और हर क्षेत्र को प्रभावित करती है, इसलिए मणिपुर की समस्याओं के लिए राजनीतिक निदान भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं | किन्तु प्रश्न यह है कि यहाँ आश्वासन के अलावा आज तक और कुछ नहीं मिला |

साक्षात्कार के दौरान यह पूछने पर कि क्या वे फिर से वर्तमान सरकार तक अपनी बात पहुंचाने के लिए कोई प्रयास करेंगी जिससे जो राजनीतिक निदान आप चाहते हैं वो मिल सके | इस पर रमानी देवी कहती हैं कि वर्तमान सरकार की अभी तक की गतिविधियों से उन्हें आशा है कि इस दिशा में वह जरूर कुछ ठोस कदम उठाएगी जिस से मणिपुर को आतंक और उसके कारण होने वाले नुकसानों से निजात मिल सके |

उल्लेखनीय कार्य का पुरस्कार

मैयरा पायिबी महिलाओं के हौंसले को सराहने और इनसे प्रेरणा लेने के लिए यह बात बड़ी छोटी सी है लेकिन उल्लेखनीय है कि मैयरा पायिबी की सोच को जीवन भर आगे बढ़ाने और सामाजिक क्षेत्र में विशेषकर महिलाओं के हित और सम्मान के लिए लड़ने वाली थोकचोम रमानी देवी के साथ ए.के. जानकी लेयेमा, एल. मेमचाओबी देवी, वाई. लेयेमा और पूर्णीमाशी लेयेमा को टाइम्स ऑफ़ इंडिया सोशल इम्पैक्ट अवार्ड दिया गया [xiv]|

ऐसे कई पुरस्कार और प्रोत्साहन इनके प्रयासों के लिए दिए जा चुके हैं और भविष्य में दिए जाते रहेंगे लेकिन कल्पना करना कठिन है कि किन परिस्थितियों में इन्होंने अपनी आवाज़ को

बुलंद किया और उसका सकारात्मक परिणाम हुआ | आज वास्तव में मणिपुर की ये माताएं दुर्जेय बल का पर्याय बन चुकी हैं |

<u>मैयरा पायिबी की संगठनात्मक शक्ति</u>

मैयरा पायिबी पहले की तुलना में आज अधिक संगठित हो गयी है | आज मणिपुर में कुल नौ जिले है | पूर्वी इम्फाल, पशिमी इम्फाल, थौबाल, बिष्णुपुर, चंदेल, चुरचन्दपुर, तामेंगलोंग, उखरुल और सेनापति | इनमे स पांच जिले पहाड़ी क्षेत्र हैं जहाँ अधिकतर जनजातीय आबादी है | जिनमे नागा-कुकी प्रमुख है |

ये पहाड़ी क्षेत्र मणिपुर के चारों ओर है | बचे हुए चार जिले मणिपुर का मैदानी भाग है | इस घाटी क्षेत्र के चार जिलों (पूर्वी इम्फाल, पशिमी इम्फाल, थौबाल, बिष्णुपुर) में ही मणिपुर की मूल आबादी मेतेई लोग रहते हैं |

मैयरा पायिबी महिलाओं का संगठन है | मणिपुर की प्रत्येक महिला जो मेतेई समाज की है, वह संकट के समय मैयरा पायिबी ही है | यही मैयरा पायिबी की मूल शक्ति है कि संकट के समय प्रत्येक महिला अपने उत्तरदायित्व को भली-भांति समझती है |

<u>मैयरा पायिबी की संगठनात्मक संरचना</u>

मैयरा पायिबी के संगठनात्मक ढांचे को तीन भागों में प्रादेशिक, जिला और लेकाई (मोहल्ला) स्तर पर बांटा गया है | मेतेई आबादी बहुल जिले पूर्वी इम्फाल, पशिमी इम्फाल, थौबाल, बिष्णुपुर की प्रत्येक लेकाई में महिलाओं का संगठन है ये सभी संगठन मैयरा पायिबी के अंतर्गत आते है |

इनकी कार्यकारिणी प्रमुखत: अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष और सलाहकार (परामर्शदाता) को मिलाकर बनती है | इन राज्य स्तरीय प्रत्येक संगठनों के अध्यक्ष का चुनाव आपसी सहमति और समझ से होता है | इन संगठनों के अध्यक्ष पद की पात्रता में- मनोबल, बुद्धिमत्ता, सामाजिक-राजनीतिक और सामयिक समझ, अपने समय की सक्रिय कार्यकर्ता और निर्भय व्यक्तित्व वाली महिला को प्राथमिकता दी जाती है | मैयरा पायिबी की सांगठनिक संरचना कुछ लचीली है | अर्थात अन्य संगठनों (**NGO**) की तरह रोज़ काम करना, स्थायी अथापित कार्यालय होना अनिवार्य नहीं है | किन्तु जब कभी संकट की स्थिति आती है तो ये सभी महिलाएं आवश्यक रूप से संगठित होती हैं | बेशक इनकी सांगठनिक संरचना लचीली है लेकिन संकट की स्थिति में इनका एकत्रीकरण और संगठन कठोरतम होता है |

<u>मैयरा पायिबी संगठन का कार्यक्षेत्र</u>

अपनी लेकाई (गली-मोहल्ले) के मामलों से लेकर पड़ोस में होने वाले झगडे, चोरी, अंडरग्राउंड के लोगों (उग्रवादियों) द्वारा जबरन वसूली का खतरा, भाग कर विवाह कर लेना, दूसरी शादी या शादी होने के बाद भी किसी से सम्बन्ध रखना, तलाशी अभियान के बाद सेना द्वारा लोगों को ले जाने पर उन्हें विशेषकर महिलाओं को छुड़ाना जैसे सभी मामलों के सम्बन्ध में मैयरा पायिबी सक्रिय भूमिका निभाती है |

लेकाई (गली-मोहल्ला) स्तरीय मैयरा पायिबी समूह किसी आन्दोलन या धरना प्रदर्शन के दौरान राज्य स्तर के मैयरा पायिबी समूह से जुड़ जाते हैं ||

रोचक बात यह है कि लेकाई स्तरीय मैयरा पायिबी समूह ऐसे ही नहीं बन गए | बल्कि राज्य स्तरीय किसी न किसी मैयरा पायिबी संगठन की सदस्य महिला (पायिबी) द्वारा ही ये शुरू किये गए | ऐसी कई मैयरा पायिबी संगठन हैं जो पंजीकृत नहीं है किन्तु फिर भी वे इस दिशा में स्वयं प्रेरणा से कार्यरत हैं |

मैयरा पायिबी समूह का नेतृत्व करने वाली महिलाएं आज अपनी शक्ति भली-भांति पहचानती हैं | आज राजनीतिक रूप से उनका महत्त्व अपूर्व है |

किसी भी मैयरा पायिबी महिला से बात करो, वे सभी एक बात पर सहमत है कि वे अपनी प्रादेशिक एकता के लिए एकजुट होकर खड़ी हैं | और वर्तमान में राजनीतिक एवं पारिस्थितिकीय तनाव के चलते यह भाव और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है |

<u>प्रमुख मैयरा पायिबी संगठन</u>

आज मणिपुर में प्रत्येक बस्ती में महिलाओं का संगठन है जो मैयरा पायिबी के विचार से अंकुरित हुए हैं | इनमें शामिल महिलों को मैयरा पायिबी के नाम से जाना जाता है |

वर्तमान में मणिपुर में राज्य स्तर के चार मैयरा पायिबी संगठन कार्यरत हैं | यहाँ यह उल्लेखनीय है कि मणिपुर में इन संगठनों को किसी न किसी वैचारिक संगठन का समर्थन प्राप्त है |

समाज में अधिक प्रभावी और लोगों की स्वीकार्यता के अनुसार सबसे पुराना मैयरा पायिबी संगठन **'All Manipur Women's Reformation and Development Samaj'** है | जिसका प्रचलित नाम **'नूपी समाज'** है | इस 'समाज' को **United Committee of Manipur** का समर्थन प्राप्त है |

इसकी स्थापना इमा चोबी और इमा रमानी देवी के नेतृत्व में की गयी थी | 86 वर्ष इमा रमानी देवी मणिपुर की वह शख्सियत हैं जो मैयरा पायिबी संस्कृति की शुरूआत अर्थात नुपिलान की योद्धा से लेकर निशाबंदी और वर्तमान रूप मैयरा पायिबी की अनुभवी जीवंत गवाह हैं |[xv]

दूसरा संगठन है- **'Poirei Leimaro'** | विचारधारा के मानकों से इस संगठन को '**All Manipur United Clubs Organization'** का समर्थन प्राप्त है |

इनके अलावा पिछले कुछ समय में दो संगठन और बने हैं | जिन्होंने प्रदेश स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है | इस क्रम में तीसरा समूह है- कंग्लामेयी (**KANGLAMEI)** | जिसकी संस्थापक इमा लेइरिक हैं और चौथा संगठन है इमा जानकी द्वारा स्थापित **मीखोल** |

<u>मैयरा पायिबी के विरोध का स्तर और अहिंसात्मक व्यवहार</u>

मई 2010 में मणिपुर में स्वायत्त जिला परिषद् के चुनाव हुए थे | जिसमें नागा उग्रवादी संगठन **NSCN-IM** का नेता आइसक मुइवाह अपने घर मणिपुर के उखरुल जिले के सोमदाल गाँव में आया था | इसके खिलाफ पूरी राजधानी इम्फाल में धरने प्रदर्शन शुरू हो गए थे कि मणिपुर में मुइवाह का प्रवेश निषेध किया जाये | लेकिन यह तनाव तब और अधिक बढ़ गया जब केंद्र सरकार द्वारा मुइवाह को उसके घर जाने की अनुमति दे दी गयी | जबकि मणिपुर प्रदेश सरकार इस निर्णय के विरोध में खड़ी रही | क्योंकि उन्होंने भांप लिया था कि केंद्र के निर्णय के पक्ष में आने से प्रदेश में जातीय संघर्ष पनप जायेगा |

मुइवाह के प्रवास पर मणिपुर सरकार पूरी नजर बनाये हुई थी कि मुइवाह अपने मुख्य एजेंडे के लिए लोगों को भड़काने का काम करेगा, जिसमें ग्रेटर नागालैंड की मांग प्रमुख है और यह मणिपुर की एकता के लिए खतरा है |

11 अप्रैल 2010 को मणिपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 39 को नागा समूहों द्वारा बंद कर दिया गया | गाड़ियों की आवाजाही रुकने से मणिपुर में सामान आना बंद हो गया | इसका सीधा अर्थ था- मणिपुर की घाटी अर्थात मेतेई बहुल जिलों में महंगाई बढ़ना |

इम्फाल राजधानी है पहाड़ों के लोग भी सामान खरीदने यहीं आरे हैं | ये पहाड़ी लोग नागा और कुकी ही हैं | बंद के दौरान पहाड़ी लोग थोक की मात्रा में चावल और दैनिक उपयोग की

आवश्यक सामग्री खरीद कर ले जाते हैं | मणिपुरी लोगों के लिए सामान में कमी होने लगती है | एक तरफ सामान की आपूर्ति नहीं होती तो दूसरी और इस प्रकार से दुकानों में सामान की कमी होने लगती है तो दूकानदार अधिक्लाभ कमाने के लिए दाम बढ़ा देते हैं |

मणिपुरी सरकार नेशनल हाईवे को बंद करने और मुइवाह के आने को एक पूर्व नियोजित साजिश के रूप में देख रही थी | इसीलिए 3 मई 2010 से मणिपुर के सेनापति जिले की और से मणिपुर के प्रवेश द्वार माओ गेट पर भारी सुरक्षाबल तैनात कर दिया और मुइवाह के प्रवेश पर रोक लगा दी |

माओ गेट के निवासी नागा समूहों ने अपने नेता के लिए स्वागत रैलियाँ निकालीं वहीँ दूसरी और सुरक्षा बलों का विरोध कर रहे थे जो धीरे-धीरे हिंसक बनता जा रहा था | भीड़ हिंसक होती गयी | सुरक्षाबलों और नागा समूहों में झड़प हुई | मणिपुर पुलिस द्वारा चलायी गोली में 2 छात्रों को गोली लगी | यह 6 जून 2010 को हुई रैली का हिस्सा थी |

बंद का समय बढ़ता गया | महंगाई के आसार बढ़ते गए | ऐसी संकट की स्थिति में पियर पायिबी समूह ने एक और बीड़ा उठाया- महंगाई ना बढ़ने देने का | पूरे मणिपुर में इस प्रकार की सामूहिकता देखनें को मिली |

मैयरा पायिबी महिलाएं इकट्ठी होकर बाज़ार और दुकानों में जाती थीं | दुकानदारों का भरोसा जीतकर उनसे यह शपथ दिलवाती थीं कि ऐसी संकट की घडी में वे जनता के हित में सोचकर खाने-पीने और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दाम नहीं बढ़ाएंगे | और उन्होंने ये भी संकल्प किया कि आस-पास के पहाड़ी क्षेत्रों से ट्राइबल लोगों को भी अपने बाज़ारों में नहीं आने देंगी | क्योंकि वे लोग एक साथ भारी मात्रा में खाने-पीने का सामान खरीद कर ले जाते हैं |

प्रत्येक बार विपत्ति के स्थिति में मैयरा पायिबी समूह पूरे समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह निस्वार्थ भाव से करते हैं | और अपना स्वभाव अहिंसात्मक ही बनाये रखते हैं |

<u>मैयरा पायिबी की सरकार से अपेक्षा</u>

मैयरा पायिबी संगठनों का प्रतिनिधि मंडल कई बार सरकार से मदद के लिए आग्रह कर चुका है | लेकिन कोई निर्णायक परिणाम ना मिलने के कारण राज्य सरकार और केंद्र सरकार के प्रति मैयरा पायिबी संगठनों की नाराज़गी साफ़ तौर पर ज़ाहिर होती है | हालांकि कुछ हालातों में राज्य सरकार केंद्र सरकार के विरुद्ध जाकर जरूर मैयरा पायिबी संगठनों का साथ देती है | क्योंकि उस समय राज्य में कानून व्यवस्था बिगड़ने और गृह युद्ध जैसे हालातों का ख़तरा रहता है |

'All Manipur Women's Reformation and Development Samaj' अर्थात '**नूपी समाज**' की वरिष्ठ नेता 86 वर्षीया इमा थोकचोम रमानी देवी, नेताओं के साथ खींचे गए उनके फोटो जो अब पुराने हो चुके हैं, दिखाते हुए कहती हैं कि "हम अपना प्रतिनिधि मंडल लेकर केंद्र सरकार के पास भी कई बार अपनी समस्याओं के निवारण के लिए गए हैं | हम व्यक्तिगत अपने लिए कुछ मांगने नहीं गए थे | मणिपुर में शांति स्थापित हो, यहाँ भी बड़ी यूनिवर्सिटी, फैक्ट्री, कल-कारखाने खुलें, यहाँ के बच्चों को भी उच्च-शिक्षा और रोज़गार मिले, मणिपुर में विकास कार्य तेज़ी से बढ़े, इस आशा से हम राज्य सरकार और केंद्र सरकार से मदद की अपेक्षा रखते हैं | पर हर बार हमें उनकी तरफ से केवल आश्वासन देकर लौटा दिया गया | किसी ने भी मणिपुर की समस्याओं के निदान और यहाँ के हालात को सामान्य करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया | जब तक मणिपुर में अफ्स्पा है तब तक विकास कैसे संभव है |"

साक्षात्कार में वे आगे कहती हैं- "अभी बनी नई केंद्र सरकार से हम लोगों को कुछ उम्मीद जगी है | जिस प्रकार से इस सरकार ने अभी तक प्रयास किये हैं, उससे लगता है कि वे यहाँ की समस्याओं को लेकर चिंतित हैं | हम अपनी बात को लेकर इनके पास भी जायेंगे |"

निष्कर्ष:

आज मैयरा पायिबी संगठन स्वयं में एक संस्थान है, जो असंभव को संभव करने वाले अपने प्रयासों के ज़रिये समाज सुधार के कई मानकों को गढ़ चुका है और दुनिया को अपनी संस्कृति को अपनाकर घर-समाज और भावी पीढ़ी को सही डगर पर चलने का पाठ पढ़ाता है | मणिपुर में रहते हुए पिछले काफी लम्बे समय में मैंने यह देखा कि हर दूसरे-तीसरे रोज़ 20-30 या 50-100 महिलाओं के समूह में एकत्रित होकर बैठती हैं | मणिपुर की सामजिक-सांस्कृतिक विरासत को संजोने का एक सबल उपाय यह सामजिक परम्परा भी है | जो पहले बिना किसी नाम के केवल एक परम्परा के रूप में जीवित थी |

शराब मुक्त मणिपुर बनाने में मुख्य भूमिका निभाने के कारण इन्हें ही निशाबंदी कहा जाता था और फिर इनके कार्य का दायरा बढ़ा तो यही महिलाएं मैयरा पायिबी के नाम से पहचानी जाने लगीं | लेकिन हर परिवर्तन में कार्य का हेतु समाज और राष्ट्र निर्माण की भावना ही रही और कार्य करने का अहिंसात्मक तरीका मेतेई संस्कृति की ही देन है | आज उस सोच का स्वरुप जरूर बदल गया है लेकिन इसे उसकी मूल सोच में जीवित रखने की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएं ही वह एक सूत्रमय शक्ति हैं जिसके कारण परिवार, घर समाज और राष्ट्र एकता के सूत्र में बंध सकता है |

इस परम्परा को उसकी मूल सोच के साथ जीवित रखना उतना ही आवश्यक है जितना कि एक पेड़ का उसकी जड़ों से जुड़े रहना | यदि मूल विचार में किसी भी कारण से तब्दीली (विकार) हुई तो संभव है भविष्य में फलस्वरूप बरगद की छाँव की जगह बबूल के कांटे ही मिलें |

यह शोध कार्य इस दृष्टि से किया गया महत्वपूर्ण विस्तृत प्रयास है जो भविष्य में निशाबंदी या मैयरा पायिबी या वह मूल परम्परा जो पहले बिना किसी नाम के जीवित थी उसके संवर्धन की सहायता से सामाजिक-सांस्कृतिक निर्माण के प्रयासों को सक्रिय रखने में मदद करेगा |

मूल विचार की जीवंतता की दृष्टि से, महत्वपूर्ण प्रयासों से फलित इस परम्परा को उसके मूल रूप में जीवित रखना वर्तमान में सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से समृद्ध मणिपुर को जीवित रखने के सामान है | इस दृष्टि से भारत की मूर्त सांस्कृतिक विरासतों के निमित्त किये गए इस शोध की मणिपुर के सन्दर्भ में विशेष महत्ता है |

फोटो

Photos

Interviewing Meire Paibi of Bamonkampu Women Association, Bamon Kampu, Imphal East, Manipur

Ph. Sakhi Devi, Meira Paibi Leader and President, Apunba Manipur Kanba Ima Lup (AMKIL)

Thokchom Ramani Devi, Meira Paibi Leader and General Secretary, All Maniur Women's Reformation & Development Samaj (Nupi Samaj)

Meira Paibi March in Imphal, Manipur

"PANTHOIBI APUNBA NUPI LUP"
Leikai Level Meira Paibi Office
at Kongba Kshetri Leikai, Imphal East, Manipur

हाल की सुर्ख़ियों में मैयरा पायिबी

MEIRA PAIBI IN NEWS

IMPHAL, FRIDAY
JUNE 24, 2016
ইঙাগী ১৯ পানবা, ইরাই
হিজরি ১৪৩৭, রমদ্বানগী ১৮নি পানবা

Page-1

ichelexpress.org
e-mail: ichelexpress@gmail.com
Vol:I, Issue No : 273 | Pages 8 | ₹ 3.60

ICHEL EXPRESS (A MORNING MANIPURI DAILY)

ঈচেল এক্সপ্রেস

THE VOICE OF MANIPUR

পুং ৪৮গী মণিপুর বন্দগী অহানবা নুমিংতা ষ্টেট অসিগী মীয়ামগী পুন্সিদা চাওনা অকায়বা পীখ্রে

ঈচেল ন্যুজ নেটৱার্ক
ইম্ফাল, জুন ২৩

জেসিআইএলপিএসকী হান্নগী কনভিনর খোমদ্রম রতনগী মথক্তা মণিপুর পুলিসনা রান্দৈ লাউথোকখিবগী মায়োক্তা শেমখিবা জেএসিনা ঙরাং অহিং নোংয়াইদগী কৌখিবা পুং ৪৮গী মণিপুর বন্দগী ঙসি অহানবা নুমিত্তা ষ্টেট অসিগী মীয়ামগী পুন্সিদা চাওনা অকায়বা পীখ্রে।

বন্দ অসিনা মরম ওইদুনা ইম্ফাল সহর অমদি মসিগী অকোয়বদা লৈরিবা দুকানশিং, কৈথেলশিং অমদি লল্লোন-ঈতিক্তী মফমশিং থোঙ লোনখি। মহৈ তম্ফম শঙশিং থোঙ হাংনখিদে। লম্বীদা গারি চেনখিদে অমদি মণিপুর গভর্নমেন্টকী ওফিসশিংদা ইমপ্লোইয়ীশিং কানরকপগী চাং হন্থখি।

বন্দ অসিবু শৌগৎতুনা ইম্ফালগী শিংজমৈ, রাংখৈ, কোংবা য়াওনা তোঙান-তোঙানবা মফমশিংদা মীয়াম্না লম্বীদা মৈ থাদুনা উ-রা ফৈজিদুনা লম্বী থিংখি। শিংজমৈ মায়কৈদগী বন্দ অসিগী চাওনা মমি তাখি। ইম্ফালগী ন্যু চেক্কোন বজার বোর্দ রিমেন ভেন্দর অমদি পাইওনিয়র ষ্ঠ ক্লব নোংপোক চেক্কোন অনীনা খূৎশম্নদুনা ন্যু চেক্কোন ত্রাফিক পোইন্ট মনাক্তা বন্দ শৌগৎতুনা লম্বী থিংখি।

বন্দ অসিনা মরম ওইদুনা ➥ মথা লামায় ৩দা

ICHEL EXPRESS

ঈচেল ষ্টেট

Page-3

লামায় ৩

24-June-2016 ইম্ফাল, জুন ২৪, ২০১৬ ইং, ইরাই

রতনবু ব্রান্টেদ লাউথোকখিবসি আই এল পি এসকী ঈহৌ নমথনবা হোৎনবনি ঃ জয়কিষন

আই এল পি এসকী খোঙজং মফম কয়াদা চঙশিল্লি

ঈচেল ন্যুজ নেটব্রার্ক
থৌবাল, জুন ২৩

মণিপুরগী য়েলহৌমী কন্নবগীদমক মণিপুরদা ইন্নর লাইন পার্মিট সিষ্টেম চৎনহল্লু হায়না খোঙজং চংশিল্লিবা জোইন্ট কম্মিটি ওন ইন্নর লাইন পার্মিট সিষ্টেমগী হান্নগী কনভিনর খোমদ্রাম রতনবু মণিপুর গভর্ণমেন্টনা আইনগী চৎন-কাঙলোন থুগায়দুনা ব্রান্টেদ লাউথোকখিবসি আই এল পি ঈহৌবু নমথনবা গভর্ণমেন্ট অসিনা শীনবা থৌরাং অমনি লৌই হায়না বিজেপী মণিপুর প্রদেস লেজিষ্টলেচর ব্রিংগী লীডর ওইরিবা থাংমৈবন্দ কেন্দ্রগী এমএলএ খুমুকচম জয়কিষননা ফোঙদোরক্লি।

ঙসি থাংমৈবন্দা লৈবা মহাক্কী য়ুমদা পাউমীশিংগা উনবা অমদা এমএলএ অসিনা হায়, খোমদ্রাম রতন লালহৌবগা মরী লৈনৈ হায়বা তারবসু আইনগী ওইবা থোঙদা খুদমগা লোয়ননা মীয়াম মমাঙদা লাউথোক্লম্নগদি খুন্নাই অসিগী মীয়াম্মা লান্না লৌরম্লোইদবনি। আইনগী চৎন-কাঙলোন পুম্নমক কান্থোক্লম্নগা আই এল পি এসকী ঈহৌ কন্না চংশিল্লিঙৈ মরক্তা রতনবু ব্রান্টেদ হেক্তা লাউথোকপা হায়বসি হৌরিবা ঈহৌ অসিবু নমথনবা থৌরাং অমনি হায়না মীয়াম্মা লৌই।

মণিপুরদা হৌরিবা ঈহৌ খুদিংমক লালহৌবশিংগা মরী লৈনবা ওইনা উহন্নবা হোৎনরিবা অসি অচুম্বা নত্তে। খোমদ্রাম রতনবু আইনগী চৎন-কাঙলোন কায়না ব্রান্টেদ লাউথোকপা হায়বসি লৈবাক অসিগী আইনবু লান্না লমজিংবনি, আইনবু লান্না শীজিন্নরিবা কাঙবু অদুসু মীয়াম্মা আউট লোনি হায়না মীয়াম্মা লৌবা হায়বসি মশানা তাবনি। মরম অদুনা আইনবু লান্না শীজিন্নরিবা মখোয়গী মথক্তসু এফআইআর পান্দুনা কেস লৌখৎফম থোক্কই হায়খি।

মহাক্কা হায়, মণিপুর গভর্ণমেন্টকী খোঙথাং অসি কৈদৌনুংদা লৈবাক মীয়াম্মা য়েংদুনা লৈথোক্লোই। মীয়ামগী খোল্লাও লাউবগী হক দেমোক্রেসিনা চপচানা খুন্নাই অসিগী মীওইশিংদা পীরিবনি। দেমোক্রেসিগী ব্রাহন্থোক লৈহন্দ্রবদি মণিপুর গভর্ণমেন্ট অসি এন্টি দেমোক্রেসিগী থবক চখরে হায়না লৌগনি।

মণিপুরদা ইস্যু কয়া পীক থন্না লৈরিবসি মণিপুর গভর্ণমেন্টকী থৌশিল শোয়বননি। মরক অসিদা অমনা অমবু হন্দুনা ঙাংনবনা ঈহৌ অসিগী ব্রারোইশিন অমা পুরকপা ঙম্লোই। ঐগী ঐগী হায়বা ব্রাখল্লোন অদু থাদোক্লরগা পুন্না হোৎনমিন্নবা অমা চংই। হৌজিক হৌজিক পাল্লিবা মণিপুর গভর্ণমেন্ট অসিনা মীয়াম্মা হৌরিবা ঈহৌ অসিগী ব্রারোইশিন অমা পুরকপা ঙম্লোইদবা ওইরগদি মীয়াম খঙনা ঙম্লোই হায়হৌবনা অচুম্বা খোঙথাং ওইগনি নংত্রবদি ষ্টেট অসিদা অমাঙবা কয়া লাক্কনি।

মহাক্কা মখা তানা, রুল্লিং পার্টিগী এমএলএ অমসু ওইরিবা আর কে অনন্দ হৌজিক হৌজিক হৌরিবা ঈহৌ অসিগী মতাংদা মণিপুর গভর্ণমেন্টনা চপ চাবা ব্রাফম অমা ফোঙদোকফম থোকপনি হায়রকখিবা ব্রাফম অদু থাগৎপা ফোঙদোক্লদুনা মণিপুর গভর্ণমেন্টনা ইন্দিয়ন সিটিজেন অমগী হককী ব্রাংমদা থবক তৌবগী মহুৎতা খোমদ্রাম রতনগী মথক্তা ব্রান্টেদ লাউথোকখিবা অদু হন্দোকপনা অচুম্বা খোঙথাং ওইগনি হায়নসু ফোঙদোকখি।

অমরোমদা, রতনগী মথক্তা ব্রান্টেদ লাউথোকখিবা অদুবু য়ানিংদবা ফোঙদোকপা ওইনা মণিপুরগী তোঙান তোঙানবা মফমশিংদা ব্রাকং মীফমশিং অমদি থৌওং অসিবু য়ানিংদবা ফোঙদোক্লুনা কৌবা পুং ৪৮গী বন্দ অদুসু মপুং ফানা শৌগৎনখি।

হান্নগী জেসিআইএলপিএস কী কনভিনর খোমদ্রাম রতনবু মণিপুর গভর্ণমেন্টনা ব্রান্টেদ লাউথোকখিববু য়ানিংদবা ফোঙদোক্লুনা জেএসিনা ঙরাং অহিংদগী চংশিল্লকখিবা পুং ৪৮গী মণিপুর বন্দ শৌগৎলদুনা অপুনবা কংলৈ খুন্নাই কনবা লুপ য়াইরিপোক্লসু বন্দগী খোঙজং চংশিনখি। বন্দ শৌগৎপশিংনা য়াইরিপোক থোংদা লম্বী থিংদুনা চখোক চৎশিন তৌবা য়াহনখিদে মদুনা মরম ওইরগা পেসেঞ্জর সর্ভিসশিং লেপ্পখি অমদি দুকানশিং থোঙ লোন্নখি।

মণিপুরদা আইএলপিএস চৎনহল্লু হায়বা ব্রাফম অদুবু শৌগৎলদুনা বিষ্ণুপুর দিষ্ট্রিক্টকী মনুং চনবা কাইরেনফাবীদা জেসিআইএলপিএস ষ্টুদেন্ট ব্রিং বিষ্ণুপুর, রুমেন ব্রিং অমদি কাইরেনফাবী মৈরা পায়বী লূপ্পা শীন্দুনা ঙসি ব্রাকং মীফম অমা ফমখ্রে। মণিপুরদা আইএলপি চৎনহল্লু, এসেমব্লিদা অনৌবা আইএলপি বিল পাস তৌ, দিল্লিদা লৈবা বিল অসি এক্ট ওল্লোকপীয়ু, রতন ব্রান্টেদ লাউথোকপা য়ানিংদে হায়বা প্লে কার্দশিং শীজিন্নখি অমদি খোল্লাও কয়া লাউখি।

Largest Circulated News Paper In Manipur
The Sangai Express

Jul 31, 2016 thesangaiexpress

JCILPS sponsored bandh total, effigies burnt

Meira Paibis with local youth protest for ILP in Manipur

IMPHAL, Jul 30: The 24-hour State-wide public curfew imposed by JCILPS in protest against the police crackdown on a public meeting at Singjamei was total.

All shops, business establishments, banks, cinema halls remained closed while markets and streets wore deserted looks.

In the afternoon, irate bandh supporters burnt the effigies of Chief Minister Okram Ibobi and Deputy Chief Minister Gaikhangam at Khongman Mangjil and Singjamei amidst slogans.

The impact of the bandh could be seen at Paona bazar, Thangal bazar, Ima markets and other major markets of the capital.

Although a few women vendors and street vendors came to Ima Keithels and temporary markets of Khwairamband bazar to sell vegetables and other items, their number was negligible.

Government Departments and other offices also recorded very low attendance during the public curfew.

Almost all the private vehicles and passenger vehicles remained off the roads. No inter-

State and inter-district passenger vehicles came to the State capital during the stir.
Police and other security forces personnel were seen deployed at different areas to thwart unwanted incidents.
Public curfew supporters blocked roads at various localities by placing boulders, bamboos, tree branches and burning tyres on the road.
The public curfew was more intensely imposed on Singjamei-Kongba road. People in huge numbers along with the members of the JAC constituted against the wanted tag on Ratan were seen blocking the road at different points.
Effigies of Chief Minister Okram Ibobi and Deputy Chief Minister Gaikhangam were burnt at Khongman Mangjil and at Singjamei in the afternoon.
The public curfew supporters shouted slogans like ‘we condemn police’, ‘we condemn assault of students by the police’, ‘remove wanted tag from Kh Ratan’, ‘long live Manipur’, ‘we want ILP’ and ‘we demand ILP’ etc.
A team of Singjamei police station along with CRPF women personnel were also seen deployed near Singjamei bridge the whole day.
They erected a barricade in the middle of the bridge. However, the security forces left a small space to allow movement of two-wheelers and light vehicles.
No untoward incident has been reported till the time of filing this report.
The 24-hour public curfew imposed also affected normal life in Bishnupur district, reports our correspondent.
Bishnupur Keithel, Moirang Keithel and other business establishments remained closed.
Private and commercial vehicles were made to turn back while public curfew supporters drove away some women vendors at Moirang Lamkhai and Moirang Keithel early morning. Though minor scuffle broke out between police and bandh supporters, no untoward incident was reported.
Inauguration of the newly set up SBI, Moirang Branch was also postponed due to the public curfew. Locals of Moirang, Kumbi Thanga ACs who have been eagerly waiting to avail banking services for a long time have expressed displeasure over the hindrance to developmental initiatives.
In Yairipok and Pallel areas, public curfew supporters led by Apunba Nupi Khunnai Lamjing Meira Lup, Yairipok, Ching-Tam Apunba Nupi Lup and PALEM took part in the protest by blocking roads in and around Yairipok Keithel and Pallel Keithel.

THE TIMES OF INDIA

Oinam Sunil| TNN | Jan 10, 2013, 07.25 AM IST

TOI Social Impact Awards:

Lifetime contribution — Meira Paibi[xvi]

MOTHER POWER: Manipur's Meira Paibi network is one of the largest women's groups with the entire adult Meitei ...

Meira Paibi holding flaming torch

IMPHAL: Their call to arms always causes a bit of a clamour. It's the sound of a stone being banged against an electric pole, a sound that's picked up and transmitted between localities to bring out the women of Manipur at any hour of day or night.

The Meira Paibi — literally, women with flaming torches — is the largest grassroots, civilian movement fighting state atrocities and human rights violations in Manipur. For decades, the women have faced the state's armed might and aggression with nothing more than their will and unity.

The movement by Meitei women began in the 1970s as a drive against alcoholism and drug addiction. The women would walk in groups at night, impose fines on drunks, and burn stocks of alcohol. Liquor was eventually banned in the state. "We've been fighting against drug abuse, crimes against women, and the Armed Forces Special Powers Act (AFSPA).We will continue to fight these," says Ak Janaki Leima, a Meira Paibi leader.

In 1980, the entire state was brought under the AFSPA to counter insurgency. As innocent young men were often arrested, tortured and killed, the women took to the streets demanding repeal of the Act. Night after night, they patrolled the streets to prevent search operations by security forces. Women became the wall protecting society against violence and killings.

Meitei society is patriarchal but women play a central role. The old Manipur kingdom fought many wars and men went away to fight for months. Women filled their shoes, even trading in Imphal's markets.

More recently, the Meira Paibi's protests hit global headlines in July 2004 after 12

elderly Manipuri women disrobed outside Kangla Fort, where the Assam Rifles were stationed, and walked naked carrying a large banner that read 'Indian Army Rape Us'. They were protesting against the rape, torture and custodial killing of a young woman, Thangjam Manorama, by Assam Rifles personnel.

"Our protest was an extreme step. But, young Manorama had been raped and murdered despite Assam Rifles issuing her family an arrest memo. We realised the Indian army would continue to misuse the Act. We decided to show our anger," says 83-year-old Thokchom Ramani, a Meira Paibi leader. She adds the army continues to misuse the Act without fear of being held accountable for their excesses.

Ramani will receive the award along with four others: Ak Janaki Leima, L Memchoubi Devi, Y Leirik Leima and Purnimashi Leima.

It's hard to imagine these five 'imas' (mothers) transforming into a formidable force. But as one of them demonstrates, physically, it doesn't take much. She pushes the traditional wraparound or phanek lower, fastens the 'khwang chet' cloth as a belt and wraps the traditional 'phi' around her. A strip of cloth is made the turban. She grabs her meira, sets it aflame, and becomes a warrior for human rights and peace.

Some beautiful minds

Women formed the majority when the jury suggested names for the Lifetime Contribution Award. The names of Sewa founder Ela Bhatt and cancer specialist Dr V Shanta were mentioned, before Aruna Roy suggested Bengali activist and writer Mahasweta Devi who has worked for the rights of tribal communities and fought government moves to sell agricultural land to industrial giants at low prices.

"She is an icon for my generation," said Roy. Anu Aga's nominee was Sister Cyril, whose community-based approach has transformed girls' education in Kolkata. "Her work is compelling. Consider a foreign lady doing this," said Aga. Roy talked about 96-year-old Chunnibhai Vaidya who fights inequality and land grabbing in Gujarat.
When the women of Naga Mothers Association and Meira Paibi came up, all the jurists nodded, impressed with the networks' efforts to bring peace to the troubled northeast

http://timesofindia.indiatimes.com/india/TOI-Social-Impact-Awards-Lifetime-contribution-Meira-Paibi/articleshow/17963178.cms

Largest Circulated News Paper in Manipur
The Sangai Express

Meira Paibi group appeals[xvii]

Jul 29, 2016 thesangaiexpress

http://www.thesangaiexpress.com/meira-paibi-group-appeals/

IMPHAL, Jul 28 : The Huidrom Meira Paibi Lup, Imphal East has appealed to all security forces not to harass former militants who have returned to the mainstream.

Speaking to media persons at Manipur Press Club here today, Huidrom Meira Paibi Lup key functionary Huidrom Yaima said that army, Assam Rifles and police commandos have been harassing Ningombam Naoba s/o Inaocha, Ningombam Amujao s/o Inaocha and Ningombam Bishorjit s/o Thawan. All the three individuals hail from Huidrom village, Imphal East. Although they were cadres of URF, they returned home and were looking after their families after the outfit signed an MoU with the State Government, Yaima said. A public meeting held at the village had discussed frequent harassments of the former militants by security forces, she said. She then appealed to all the security forces not to disturb the villagers' tranquillity and also not to render the MoU meaningless. If any security agencies feel that the three individuals should be arrested, a prior information must be given to the local Meira Paibi group or the local club or the village committee, she added.

Largest Circulated News Paper in Manipur
The Sangai Express

Ph. Sakhi Devi Speaking on the occasion of The 18th Meira Paibi Memorial day

headlines http://www.thesangaiexpress.com/

May 29, 2016 :
thesangaiexpress : http://www.thesangaiexpress.com/langjing-outrage-recalled-meira-paibi-day/

[xviii]IMPHAL, May 28 : The 18th Meira Paibi Memorial day was observed at Tharo Devi Lampak Khurai Salanthong today under the aegis of the Meira Paibi Numit Observation Committee.

The gathering offered floral tribute to the statues erected at Tharo Devi Lampak which symbolises the Meira Paibi movement. Chief guest of the function Professor Kshetri Bimola said women's movements in 1904 (first Nupi Lan), 1939 (second Nupi Lan), 1912 (Thoubal Lan), Irabot's movement of 1935 were succeeded by a series of socio-political movements where women took key roles. These socio-political movements evolved into a phenomenal women's movement known as the Meira Paibi movement since the early 1980s. The 1980 incident of Langjing Patsoi and the resulting women's movement will forever be engraved in the history of the State. ILPS movement spearheaded by JCILPS is the burning issue in the State at

present. Students from all the corners of the State have come out in support of JCILP's movement.

Some students demanding implementation of ILPS and release of fellow students arrested by the police have launched hunger strike. At such point, dragging the issue any longer would only breed more problems. The three Bills passed by the State Assembly last year following sustained mass protest spearheaded by JCILPS are still awaiting assent of the President of India.

The enactment of the three Bills and implementation of an Act similar to ILPS is the collective demand of the people, Professor Bimola stated. Poirei Leimarol Meira Paibi Apunba Manipur president Longjam Memchoubi said that even as the people of Manipur have been observing Meira Paibi Day every year, socio-political issues which demand direct intervention of Meira Paibis have been only multiplying. She also expressed strong apprehension that these issues, if not tackled effectively in time, may put the future of Manipur in peril. The 1980's women movements are important events in the history of Manipur. Many women have perished in the hands of Indian military forces. Meirai Paibi movement was launched to fight violence and harassment meted out by security forces on civilians. AMKIL president Ph Sakhi said the fundamental purpose of Meira Paibi movement is to protect the people.

Manipuri women still possess all the courage and dedication that were evident in their ancestors. Earlier, Meira Paibis had to fight the rulers and the security forces, now the issues are varied ranging from ILPS to AFSPA.

Meira Paibi Welfare Association Kangleipak (MEPWAK) president Pebam Ibemnungshi also attended the observance.

Signalfire

12th anniversary of Meira Paibi protest against rape and murder of Thangjam Manorama Devi[xix]

http://www.signalfire.org/2016/07/14/12th-anniversary-of-meira-paibi-protest-against-rape-and-murder-of-thangjam-manorama-devi/

Posted on July 14, 2016 by mat

Meira Paibi protest against murder of Thangjam Manorama Devi

In the early hours of 11th July 2004, the bullet riddled body of 32- year old Thangjam Manorama Devi was found in Laipharok Maring of Imphal East district of Manipur. She had been picked up by the paramilitary Assam Rifles from her home in Bamon Kampu Mayai Leikai and was raped and killed.

Soldiers raided her home around midnight, asking the family to wait outside while they questioned her. They signed an "arrest memo", an official acknowledgement of detention, put in place to prevent "disappearances", and took her away. Later that day her semi clad body was found in a nearby village. She had been fired with several bullets. There were gunshot wounds to the genitals and semen on her skirt suggesting she was raped before being tortured and killed. Mass protests in Manipur broke out as people demanded an immediate investigation and prosecution of the guilty. Collective anger and shock over Manorama's rape and murder gripped the world only as media reports poured in of the most spectacular and militant protest of our times.

Thangjam. Manorama Devi

On July 15, women from the Meira Paibi stripped themselves naked outside the 17 th Assam Rifles headquarters holding up the banner " Indian Army Rape Us "! Known as the Mother's Front, Meira Paibi had started as a support group for women family members of the disappeared and arrested, but had eventually also become involved in fighting against human rights abuses. They had soon joined the campaign to repeal the Armed Forces (Special Powers) Act more popularly known as the AFSPA.The case pertaining to the rape and murder of Manorama is pending before the Supreme Court. The army and central government have gone all the way to the Supreme Court to dodge prosecution, even though a judicial enquiry appointed by the state of Manipur has found the army personnel guilty. Meanwhile the people of Manipur still await justice even after 12 years.

Repeal Armed Forces Special Powers Act, 1958
Stop War on People.

This entry was posted in resistance, war and tagged afspa, counter insurgency, india, low intensity conflict, manipur,repression. Bookmark the permalink.

← People's War in India Clippings 14/7/2016
Countrywide operation against MKP and associated organizations →

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा का प्रलेखन

हेतु अध्ययन किये गए विशेषज्ञों के लेखों, पुस्तकों एवं अन्य उपयोगी सन्दर्भ ग्रंथों की सूची

1. i The Women's Movement in Manipur As Reflected in the Text 'Meira Paibee.' : Malem Ningthouja
2. ii Women Market of Manipur: An Anthropo-Historical Perspective : Indira Barua and Anita Devi
3. iii The Women's War of 1904 : By Usham Dhananjoy Singh
4. iv Nupi Lan – the Women's War in Manipur, 1939: An Overview. Ibotombi Longjam
5. v The Role of MEIRA PAIBI in Bringing about Social Change in the Manipuri Society: An Analysis : Thangjom, Lalzo S. October 2013 Journal of Social Welfare & Management;Oct-Dec2013, Vol. 5 Issue 4, p235
6. [vi] Origin of Meira Paibis found wrongly written in text book: Women's Body http://www.e-pao.net/GP.asp?src=26..200810.aug10
7. vii मनोरमा देवी की याद में : Author : समयांतर डैस्क Edition :August 2014
8. viii Peace initiatives in Manipur, India : Christin Eriksso
9. ix Women vigilantes of Manipur : Iboyaima Laithangbam
10. SOCIAL MOVEMENTS IN INDIA A Review of Literature : Ghanshyam Shah
11. New Insights into the Glorious Heritage of Manipur ; Editor of the compendium: Dr. H. Dwijasekhar Sharma
12. The Historical, Archaeological, Religious & Cultural Significance Of 'Kangla': The Ancient Citadel Of Manipur ;Pandit N.Khelchandra Singh
13. A Brief History of the Meteis of the Manipur : Wikipedia
14. xi Human Rights Watch interview with Ph. Sakhi, Imphal, February 26, 2008.
15. Meira Paibi:A Brief Story of the Women Torch Bearers from Manipur; Kapil Arambam
16. Manipur : Land and People : Bhagat Oinam
17. xii फ़ौज के खिलाफ़ खड़ीं मणिपुर की विधवाएं : दिव्या आर्या; बीबीसी संवाददाता
18. xiii Meira Paibi : Role of contemporary women torch bearers of Manipur in democratic governance : Seram Neken, Hueiyen Lanpao (English Edition) on September 20, 2012

19. xiv TOI Social Impact Awards: Lifetime contribution — Meira Paibi
20. xv She stoops to conquer : . Khelen Thokchom
21. MANIPUR: PERILS OF WAR AND WOMANHOOD- By: The Civil Society Coalition on Human Rights in Manipur and the UN
22. The Role of Women in Peace-building with reference to Manipur state of India : Singh Vandana.
23. xv The Sangai Express- http://www.thesangaiexpress.com/meira-paibi-group-appeals/ July 29, 2016
24. xv http://www.signalfire.org/2016/07/14/12th-anniversary-of-meira-paibi-protest-against-rape-and-murder-of-thangjam-manorama-devi/
25. xvhttp://www.thesangaiexpress.com/langjing-outrage-recalled-meira-paibi-day/: May29,2016
26. xv http://timesofindia.indiatimes.com/india/TOI-Social-Impact-Awards-Lifetime-contribution-Meira-Paibi/articleshow/17963178.cms : Jan 10, 2013,

हस्ताक्षर .....

नाम व पद :- गुलशन

पता :- पी- ब्लॉक, गली संख्या- 6

गृह संख्या- 101-102

मंगोल पुरी नई दिल्ली-110083

मोबाइल :- 8285304087

ईमेल :- gpreit07@gmail.com

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ

संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 2015-16 के निमित्त

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा

का प्रलेखन

दूसरी एवं निर्णायक रिपोर्ट

विशेषज्ञों के साक्षात्कार एवं वृत्तचित्र

पहली रिपोर्ट के विषय में

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 2015-16 के निमित्त **'मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा'** के सम्बन्ध में यह रिपोर्ट का दूसरा एवं निर्णायक भाग है |

रिपोर्ट के पहले भाग में – हमने शोध के माध्यम से मैयरा पायिबी परम्परा के मूल रूप को जानने और लिपिबद्ध करने का प्रयास किया | साथ ही इस सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा के इतिहास में घटनाओंवश हुए बदलावों के कारण उसके वर्तमान रूप का क्रमवार वर्णन भी प्रस्तुत किया |

उल्लेखनीय है कि मैयरा पायिबी के सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये जाते हैं, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मेतेई महिलाओं की होती है | अन्याय के विरुद्ध मैयरा पाईबी के विरोध का तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण होता है | घर में पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने से लेकर मैयरा पायिबी बनने तक की एक लम्बी यात्रा और अनूठे प्रयासों, विफलताओं-सफलताओं तथा आज इसके मूल स्वरूप में आते बदलाव की वृहद् विवरण का उल्लेख शोध प्रलेखन रिपोर्ट के पहले भाग में किया गया है |

रिपोर्ट के प्रथम भाग में मैयरा पाईबी का परिचय, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्देश्य एवं कार्यपद्धति, कार्यक्षेत्र, सांगठनिक व्यवस्था एवं संचार व्यवस्था, संगठनों एवं गतिविधियों का विवरण, आर्थिक स्वावलम्बन एवं प्रबन्धन, संगठनात्मक शक्ति एवं संरचना, प्रमुख मैयरा पाईबी सन्गठन तथा वर्तमान सक्रिय नेतृत्व एवं अहिंसात्मक व्यवहार शैली का विस्तृत तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है |

रिपोर्ट के दूसरे भाग में शोधकर्ता द्वारा लिए गये साक्षात्कार में मणिपुर में मैयरा पाईबी की नेतृत्वकर्ताओं और विशेषज्ञों के द्वारा व्यक्त विचारों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है | जो शोध को और अधिक पुष्टता, दृढ़ता एवं वैधता प्रदान करता है | साथ ही अनुमति प्राप्त कर किये गये साक्षात्कार के विडियो रिकॉर्डिंग द्वारा निर्मित एक लघु वृत्तचित्र भी दूसरे व निर्णायक रिपोर्ट का भाग है | जो कि एक डी.वी.डी (DVD) में उपलब्ध कराया गया है | वृत्तचित्र संबंधित डी.वी.डी (DVD) रिपोर्ट के साथ संलग्न है |

उक्त ICH परियोजना कार्य (2015-2016) हेतु अकादमी से सहायतार्थ प्राप्त राशि का उपयोगिता प्रमाणपत्र भी निर्णायक रिपोर्ट के साथ संलग्न किया गया है |

रिपोर्ट का दूसरा व निर्णायक भाग

भवन, मकबरे, इमारतें, किले और मीनारें ये सब मूर्त धरोहरों की साकार रूप हैं | कोई जाकर इन्हें देख सकता है, छू सकता है, इनकी सैर कर सकता है | लेकिन इस विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग समय पर कई ऐसे प्रयास हुए हैं जिनके आकार की कोई परिधि नहीं, जिनकी पहचान उजागर नहीं किन्तु उन अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों और परम्पराओं का प्रसार-प्रभाव अमिट और व्यापक है | ऐसी ही अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का एक उदहारण भारत के मणिपुर प्रान्त में ***'मैयरा पाईबी'*** है | मणिपुर की मातृशक्ति द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के साथ-साथ भावी पीढ़ियों को संस्कृतिवान बनाने का कार्य भी यही नारीशक्ति *मैयरा पाईबी* बनकर करती हैं | मैयरा पाईबी किसी एक समूह या व्यक्ति का नाम नहीं अपितु यह एक विचार है जिसके मूल में मणिपुर की सांस्कृतिक गुण और पारम्परिक विरासत का बीज है | मेतेई (मणिपुरी) भाषा में मशाल को मैयरा कहा जाता है और समाज को कठिनाइयों, अनावश्यक उपद्रवों एवं असामाजिक तत्वों से बचाने के लिए आगे आने वाली महिला जो इस बांस की बनी मशाल को धारण करती है उसे ही मैयरा पाईबी कहते हैं | मैयरा पाईबी का एक उद्देश्य समाज की दिग्भ्रमित हुई नयी पीढ़ी को पुन: मुख्यधारा में लाकर समाजोत्थान का कार्य करना है | इसमें शामिल सभी महिलाएं अपने समाज की रक्षा के लिए ही पूरी तत्परता से अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करती हैं |

नेतृत्व और संचालन मणिपुरी महिलाएं के हाथों में ही रहता है | जिसमें पुरुष वर्ग की भूमिका गौण है | मणिपुर में आवश्यक रूप से प्रत्येक महिला जो विवाहित है वह मैयरा पाईबी है | यह प्रबंध समाज में परम्परागत रूप से ही हो गया है | मैयरा पाईबी बनने के लिए किसी को बाध्य नहीं किया जाता | प्रत्येक महिला अपने समाज के हित में मैयरा पाईबी बनना स्वीकार करती है और अवसर आने पर मशाल हाथ में लेकर घर के बाहर

निकलकर अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए समाज का नेतृत्व भी करती है | नुपिलान से लेकर निशाबंदी और अब मैयरा पायिबी, अपनी सैकड़ों वर्षों की यात्रा में कई सतत समाज सुधार के कठिन प्रयासों और सकारात्मक परिणामों की थाती अपने पक्ष में लिए मणिपुर की सर्वस्वीकार्य विरासत है, जो स्वत: ही प्रत्येक नारी अपनाती जाती है |

अपने मूल विचार के साथ प्रारंभ हुई यह परंपरा अपनी लम्बी यात्रा में कई कठिन पड़ावों से गुजरी जिसमें इसकी मूल भावना को भी कई बार राजनीतिक रूप देने के असफल प्रयास किये गये | मैयरा पायिबी समाज की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करने, असामाजिक गतिविधियों से जोड़ने का असफल प्रयास भी किया गया | किन्तु मणिपुर की मशालधारी महिलाओं ने सांस्कृतिक विरासत के बीज से उपजे अपने अभियान को असामाजिक तत्वों के प्रभाव से बचाने का सामर्थ्यवान प्रयास किया | समाज सुधार और प्रगितशील समाज निर्माण का यह अनोखा प्रयास आज भी सतत जारी है |

हमने अपने शोध कार्य के निमित्त मणिपुर की लेकाई (मोहल्ले) स्तर से लेकर राज्य स्तर तक की मैयरा पाईबी समाज के विभिन्न नेतृत्वकर्ताओं से बातचीत की | जिसमें पहले निशाबन्दी और आज मैयरा पाईबी समाज की सर्वाधिक अनुभवी ध्वजवाहिका 86 वर्षीय इमा (माँ) थोकचोम रमानी देवी और इमा फौजेन्बम सखी लैयमा सहित लेकाई स्तरीय समूह बामोनकाम्पू की महासचिव सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी, मणिपुर विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्रीमती क्षेत्रीमयूम बिमोला देवी, कलाक्षेत्र से लायमयूम खुलना, गुरुमयुम बिसेश्वर शर्मा तथा मणिपुर में एक गाँधीवादी संस्थान की प्रमुख सुश्री ओइनाम सरिता देवी शामिल हैं |

मैयरा पाईबी

मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा

विशेषज्ञों के साक्षात्कार

विशेषज्ञों के साक्षात्कार

निर्णायक रिपोर्ट तैयार करने में मैयरा पाईबी समाज की प्रमुख नेतृत्वकर्ताओं, वरिष्ठ प्रतिनिधियों एवं सम्बन्धित विशेषज्ञों से जानकारी एकत्रित की है | इस संबंध में निम्नलिखित प्रमुख एवं वरिष्ठ मैयरा पाईबी नेतृत्वकर्ताओं एवं विशेषज्ञों के साक्षात्कार लिए गये हैं |

साक्षात्कार देने वालों का परिचय

1. **सगोल्शेम खोम्दोम्बी देवी–** महामंत्री (General Secretary), बमोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन, इम्फाल पूर्व, मणिपुर
2. **थोकचोम रमानी देवी-** संस्थापक एवं वर्तमान अध्यक्ष, आल मणिपुर वीमेन सोशल रिफार्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज (नुपी समाज)
3. **फौजेम्बम सखी लैयमा-** अध्यक्ष, अपुन्बा मणिपुर कन्बा इमा लुप (Apunba Manipur Kanba Ima Lup), मणिपुर
4. **प्रोफ़ेसर क्षेत्रीमयूम बिमोला देवी-** प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान मणिपुर विश्वविद्यालय
5. **ओइनाम सरिता देवी-** संस्थापक एवं सचिव, कस्तूरबा गाँधी इंस्टिट्यूट फ़ोर डेवलपमेंट, इम्फाल, मणिपुर
6. **लायमयूम खुलना देवी-** सामाजिक कार्यकर्ता एवं कोरियोग्राफर (मणिपुर डांस), दिल्ली

साक्षात्कार की उपयुक्त प्रक्रिया में प्रश्नों के माध्यम से मैयरा पाईबी के विषय में महत्वपूर्ण विभिन्न जिज्ञासाओं पर उल्लिखित विशेषज्ञों से हुई बातचीत का विस्तृत उल्लेख विस्तृत रूप से आगे प्रस्तुत है |

प्रश्न- मैयरा पाईबी को समझने के लिए सबसे सरल व्याख्या क्या है ?

सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि मैयरा पाईबी सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत की विकासयात्रा में केवल नाम परिवर्तन है | पुराने समय की नुपिलान जो राज्यजनित अन्याय के खिलाफ लड़ी और फिर निशाबन्दी के रूप में जो शराब को प्रतिबंधित कराने का काम करती थीं वे ही आज की मैयरा पाईबी हैं | क्यूंकि भाव तो मिटटी से जुड़ा हुआ है, बस पीढियां बदली हैं लेकिन महिलाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन सदैव से कर रही हैं | मणिपुर की बदलती परिस्थितियों और बिगड़ते हालातों का निर्णय था जहाँ से मैयरा पाईबी उदित हुई | जो उसी परम्परा का हिस्सा है | समाज को उर्ध्वगामी बनाना, भावी पीढ़ी के उत्थान के लिए कार्य करना, किसी भी प्रकार के अन्याय को न सहना, यह भाव हमारे संस्कृति में हैं इसी से मैयरा पाईबी का विचार उत्पन्न हुआ |

खोम्दोम्बी देवी बताती हैं कि सभी महिलाएं अपने घर से बांस का टुकडा लेकर और उसमें ऊपर से मिट्टी के तेल (केरोसिन) में सना कपड़ा लगाकर एक मशाल बनाती थीं | मणिपुर में इसी मशाल को मैयरा कहते हैं और इस मशाल को धारण करने वाली महिला को मैयरा पायिबी कहते हैं | यहीं से मैयरा पायिबी अवधारणा का जन्म हुआ | लेकिन इस परिवर्तन से उनकी गतिविधियों में कोई अंतर नहीं आया बल्कि कार्यक्षेत्र बढ़ गया | जो प्रयास पहले दिन के समय तक सीमित थे, सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से अब रात में भी ये महिलाएं मशाल लेकर घर से बाहर निकलने लगीं, साथ में अन्य महिलाओं को भी एकत्रित करती थीं | इस गश्त के दौरान यदि कोई व्यक्ति शराब पिए, उत्पात मचाते हुए या घर में क्लेश करते हुए पाया जाता था तो इन महिलाओं द्वारा दण्डित किया जाता था, साथ ही सार्वजनिक रूप से उसकी निंदा की जाती थी ताकि भविष्य में वह ऐसा न करे | इस प्रकार मैयरा पायिबी की शुरुआत हुई | ये वास्तव में वही व्यवस्था है जो 18वीं शताब्दी से पहले भी विद्यमान थी |

86 वर्षीया इमा रमानी कहती हैं कि हमने शराब बंद कराने के लिए भी कई प्रयास किये | मैं स्वयं मशाल लेकर और अपने पड़ोस की महिलाओं को साथ लेकर गाँव-गाँव घूमी हूँ ये देखने के लिए कि कहीं हमारे गाँव का कोई व्यक्ति गाँव के बाहर कोई अनुचित काम (शराब-जुआ-लड़ाई-झगड़ा) में लिप्त तो नहीं | वे कहती हैं कि शराब के सेवन ने मणिपुर की युवा पीढ़ी को नशे का आदि बना दिया है | जिसके कारण आज का युवा कुछ अच्छा करने के बजाये वह अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति निष्क्रिय होकर असामाजिक गतिविधियों में लिप्त होने की ओर अग्रसर है |

इमा सखी लैयमा कहती हैं कि हमारे समाज में किसी के सामने हाथ फैला कर मांगना बहुत बड़ा पाप समझा जाता है | ऐसा करने में शर्मिदगी महसूस होती है | यहाँ तक कि मेतेई महिलाएं अपने पति से भी पैसे नहीं मांगतीं | वे स्वयं आर्थिक रूप से सम्पन्न बनने का प्रयास करती हैं | हमारा समाज स्वाभिमान के साथ ही बहुत संवेदनशील भी हैं ऐसे में हम किसी पर अन्याय और अत्याचार होते भी नहीं देख सकते | और न ही अपने समाज के नौजवानों को भ्रष्ट होते देख सकते हैं | मैयरा पाईबी अपने समाज को सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से संरक्षित रखने का ही काम करती हैं |

इस तथ्य को अपने शोध के दौरान हमने सही पाया और पाया कि पूरे मणिपुर में एक भी शराब की दुकान नहीं है और शायद यही कारण है कि पूरे मणिपुर में एक भी व्यक्ति भिखारी नहीं है | यह किसी समाज के स्वाभिमान एवं आत्मनिर्भर होने का उल्लेखनीय उदाहण है |

ओइनाम सरिता देवी बताती हैं कि मैयरा पायिबी परम्परा की शुरुआत अपने घर-परिवार, गाँव-समाज और देश को सभ्य-सुसंस्कृत और सुरक्षित बनाये रखने और युवाओं को भटकने से बचाने के लिए हुई थी |

प्रश्न- मैयरा पाईबी का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

ओइनाम सरिता देवी बताती हैं कि मैयरा पाईबी का उद्देश्य राजनीतिक ना होकर सामजिक हित करना है | उनका यह प्रयास रहता है कि मणिपुर के घरों में घरेलू हिंसा ना हो | कोई अपने घर में महिलाओं या बच्चों या परिवार के सदस्यों के साथ झगड़ा ना करे | मैयरा पाईबी ने अपने हाथों में जो काम लिया है उसका उद्देश्य समाज में शांति बनाये रखना और यह सुनिश्चित करना है कि हमारे मोहल्ले का कोई भी व्यक्ति (महिला या पुरुष) किसी भी प्रकार के उपद्रव में शामिल ना हो, वह किसी असामाजिक गतिविधि में लिप्त ना हो, कोई भी अपने घर में परिवार के सदस्यों के साथ घरेलू हिंसा ना करे | इसीलिए सभी पाईबी (महिलाएं) शाम को अपने घरों का काम पूरा करके अँधेरा होते ही अपनी लेइकायी (गली) के बाहर मैयरा (मशाल) लेकर निकलती हैं और चारों दिशाओं में पैदल गश्त लगाती हैं | यह उपक्रम प्रत्येक लेइकायी की महिलायें स्वप्रेरणा से करती हैं | इस प्रकार यह पद्धति अमूर्त रूप से पूरे मणिपुर की संस्कृति में अनुसरणीय है |

इसके समर्थन में लायमयूम खुलना कहती हैं कि मणिपुर में समाज की उन्नति और भटकी युवा पीढ़ी को अपने पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए कुशल बनाने हेतु एक प्रयास शुरू किया कि सभी शाम ढलने के बाद प्रत्येक गाँव-मोहल्ले की महिलाएं अपने हाथ में मशाल लेकर पूरे गाँव-मोहल्ले का निरिक्षण करती थीं, और यदि कोई शराब पीते, जुआ खेलते या झगड़ा करते पाया जाता तो उसे रोकने का प्रयास करती थीं | ऐसा भी हुआ है कि यदि उपद्रवी नहीं माने हैं तो उन्हें उचित दंड भी दिया गया है |

फनजोउबम ओन्गबी सखी लेयमा देवी कहती हैं कि लेकिन समय के साथ घटती घटनाओं ने कई बदलावों और व्यवधानों को जन्म दिया | 1980 में मणिपुर में अफ्स्पा (AFSPA-Armed Forces Special Power Act) लागू होने के बाद से इस सामाजिक-सांस्कृतिक

संगठन के संघर्ष का फलक और अधिक बढ़ गया था तथा स्वरुप भी बदल गया था | पहले ये महिलाएं केवल अपने समाज को सुधारने के उद्देश्य से बाहर निकलती थीं | जिसे हम निशाबंदी की संज्ञा देते हैं | लेकिन अब सेना एवं राज्यजनित अन्यायपूर्ण अत्याचार और प्रताड़ना के विरुद्ध भी ये महिलाएं एकजुट होने लगीं | जिसे आज मैयरा पाईबी के नाम से जानते हैं |

शोध में पता चलता है कि 1980 के बाद से ही मैयरा पायिबी परम्परा की संगठनात्मक रूप से शुरुआत होती है | इससे पहले यह परम्परा समाज के अन्दर व्यवहारिक रूप में विद्यमान थी, जिसका आवश्यकता पड़ने पर लोग पालन करते थे, आज कई पंजीकृत संगठन इसमें कार्यरत हैं | ये संगठन उन्हीं महिलाओं द्वारा बनाये गये हैं जो समाज सुधार के कार्य में पूर्व से ही सक्रिय थीं |

इमा रमानी कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि पुरुष इस लडाई में हमारे साथ नहीं आ सकते यदि हम उन्हें कहेंगे तो वे साथ आ खड़े होंगे | आवश्यकता पड़ने पर वे हमारे साथ होते हैं, लेकिन महिलाएं ही इसमें आगे बढ़कर नेतृत्व करती हैं |

प्रश्न- नुपिलान से लेकर निशाबंदी और अब मैयरा पाईबी की यात्रा के बारे में बताएं | इनमें आपस में क्या सम्बन्ध है और इसमें समय के साथ क्या-क्या बदलाव आये हैं ?

हमारे यह पूछने पर कि क्या मैयरा पाईबी महिलाओं के द्वारा आयोजित हाल ही के समय की व्यवस्था है या इसकी मणिपुर में कुछ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है | इस पर इमा रमानी देवी ने कहा- मैयरा पायिबी परम्परा आज शुरू नहीं हुई | इसकी यात्रा बहुत लम्बी और सतत है | मणिपुर में महिलाएं प्रारंभ से ही समाज के हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं | महिलाओं ने ही नुपिलान किया, महिलाएं ही निशाबन्दी के लिए अग्रसर हुईं और आज महिलाएं ही मैयरा पाईबी की भूमिका में भी हैं |

प्रोफेसर क्षेत्रीमयूम बिमोला देवी कहती हैं कि नूपीलान की योद्धा, निशाबंदी की पैरोकार और आज मैयरा पायिबी ये एक ही हैं | समस्याओं के बदलते स्वरुप, उनसे निपटने की पद्धति और मणिपुर की महिलाओं के संघर्ष की विकास यात्रा में यह बदलाव आया है | नाम ही बदला है लेकिन उनकी पहचान वही है |

सागोलशेम खोम्दोम्बी देवी खुद इसका हिस्सा हैं | वे इम्फाल ईस्ट जिले की बमोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन में महासचिव हैं | वे कहती हैं कि नुपिलान के बाद शुरू में तो अपने ही घर-गली-मोहल्ले और समाज के भटके हुए नौजवानों को बचाने के लिए निशाबन्दी का समूह बना | और आज इसका वर्तमान स्वरुप जो हम देखते हैं वह मैयरा पाईबी का है | इस प्रकार आज यह लगभग 200 वर्षों से भी अधिक पुरानी विरासत का पालन हम कर रहे हैं, जिसका नाम समय के अनुसार और उसके कार्य की पहचान के अनुसार बदल गया | लेकिन आज भी उसमें सहभागी होने वाली मणिपुर की महिलाएं ही हैं, जो लालटेन की जगह अब लम्बे बांस के टुकड़े से बनी मशाल लेकर अँधेरे में निकलती हैं |

बीनालक्ष्मी नेपरम ने अपने एक लेख में लिखा था कि पहले यही मैयरा पाईबी लोग निशाबन्दी कहलाती थीं | निशाबंदी के समय ये अपने हाथों में 'पोदोन' अर्थात लालटेन लेकर चलती थीं | रात के समय में अपने घरों से लालटेन लेकर निकली ये महिलाएं अपने इलाके के बाहरी हिस्सों में इसलिए घूमती थीं कि यदि कोई व्यक्ति निशा सेवन (मणिपुरी भाषा में शराब को निशा कहा जाता है) करते मिले तो उसे रोका जाए और निशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया जाए | शराब में धुत्त या जुआ खेलता कोई व्यक्ति यदि मिलता तो उस हालत में ये महिलाएं उसे घर भी छोड़ कर आती थीं | अंततोगत्वा निशाबन्दी का उद्देश्य था मणिपुर में शराब को बंद कराना |

उपलब्ध साहित्य एवं ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित शोध बताता है कि मणिपुर की महिला 18वीं सदी के पहले से लाल्लुप काबा के समय से सशक्त है और अपने समाज को सांस्कृतिक एवं नैतिक रूप से समृद्ध करने का उत्तरदायित्व प्रारम्भ से ही निभा रही है | वह 20वीं सदी के शुरुआत के दशकों में नूपीलान की योद्धा भी है, 1930 के दशक के बाद वही महिलाएं निशाबंदी की भूमिकर का भी निर्वहन करती हैं और 1980 में समस्याओं का स्वरुप बदला तो उन्होंने मशाल धारण कर ली और आज वह मैयरा पायिबी के रूप में उसी प्रकार से अपना कर्तव्य निर्वहन कर रही है |

1970 के दशक के बाद घटी घटनाओं के बाद मैयरा पाईबी की छवि और अभियान में आये बदलाव का इतिहास बताते हुए खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि इसके पीछे उग्रवादियों को पकड़ने और अंडरग्राउंड के लोगों पर शिकंजा कसने के लिए सेना (AFSPA) के माध्यम से जो ऑपरेशन मणिपुर में चलाये जाते थे उसके कारण कई बार जबरदस्ती निर्दोष लोगों को भी सेना की कार्रवाई का शिकार होना पड़ता था |

मैयरा पायिबी की एक और बड़ी नेता फनजोउबम ओन्गबी सखी देवी कहती हैं कि “आज की परिस्थिति यह है कि रात में लोग केवल इस भय से नहीं सो पाते कि रात को आर्मी के लोग आकर दरवाज़े पर दस्तक देंगे | और हमारे बच्चों को उठा कर ले जायेंगे | उनकी (सेना की) क्रूरता की सीमायें नहीं होतीं | वे कहती हैं कि जब हम युवा अवस्था में थे तब सेना और पुलिस से हमें सुरक्षा और सौहार्द का वातावरण मिलता था | हम मानते हैं कि इसमें गलती केवल उनकी नहीं है | लेकिन आज वे हमसे गैरों की तरह व्यवहार करने लगे हैं | हमारा उनपर मातृत्व-सा स्नेह था | आज हमारा मातृत्व प्रेम भी उन पर से खत्म हो चुका है |

खोम्दोम्बी देवी बताती हैं कि AFSPA ने शुरू में (1980 में) जो ऑपरेशन चलाया उसे कोम्बिंग (Combing) ऑपरेशन के नाम से जानते हैं | यह ऑपरेशन अधिकतर रात के अँधेरे में अंजाम दिए जाते थे | जिसका लाभ उठाकर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार भी होता था | सेना के लोग रात के अँधेरे में हमारे समाज के पुरुषों विशेषकर हमारे युवा बच्चों को संदेह होने के कारण उठा कर ले जाते थे और उन्हें शारीरिक रूप से बहुत प्रताड़ित करते थे |

वे आगे कहती हैं कि हम किसी के साथ बुरा बर्ताव करने के लिए या किसी को सजा देने के लिए एकजुट नहीं होते | बल्कि बुरे बर्ताव के विरुद्ध, अन्याय के विरोध के लिए, अपने नौजवानों को बचाने और समाज में शांति एवं सुरक्षा स्थापित करने के लिए हम महिलाओं ने मोर्चा सम्भाला और मशाल हाथ में लेकर सडकों पर निकल पड़ीं | समय के साथ-साथ फिर यही महिलाएं समाज में न्याय दिलाने का काम भी करने लगीं | जो एक प्रकार से पंचायत का ही स्वरुप है | मोहल्ले के झगड़े निपटाना, घरेलू हिंसा का समाधान करना आदि |

इमा रमानी कहती हैं कि 1980 में 29 दिसम्बर की सुबह आर्मी ने हमारे इलाके के एक नौजवान लोउरेम्बम इबोमचा को हेईरांगोइथोंग माइबम लेईकाई (इलाके) में बम रखने के शक में घर से उठा लिया था | और मणिपुर यूनिवर्सिटी के नजदीक लंगथाबल आर्मी बेस कैम्प में ले गये थे | और उसे इतनी शारीरिक प्रताड़ना दी गयी थी कि वह अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो पा रहा था | हम उसे साइकिल पर बैठाकर घर तक लेकर आये थे |

आर्मी के लोगों ने इबोमचा पर शक करने और हिरासत में लेने का कारण बताया कि जब हम तलाशी कर रहे थे तो हमें इबोमचा के जूते कीचड़ में सने हुए मिले | इमा रमानी कहती हैं कि केवल जूते गीले होने के शक में किसी को उसके घर से उठा लाना और जान जाने की हद तक मारना यह किस दृष्टि से समाज के नागरिकों के प्रति न्याय है | हम जानते थे कि आर्मी जिस व्यक्ति को संदेह के कारण पकड़ कर लायी है वह बम लगाने में किसी प्रकार दोषी नहीं है | इसीलिए हमने आर्मी के खिलाफ लामबंद होने का निर्णय लिया |

आगे इमा रमानी बताती हैं कि जब हमने इबोमचा को छुडाने के लिए अपनी लेइकाई (मोहल्ले) से मार्च शुरू किया था तो हमारे साथ सैकड़ों लोग शामिल थे | लेकिन जब हम आर्मी बेस कैम्प पहुंचे तो हमारी संख्या 50 से भी कम रह गयी थी | मैं और मेरे साथ दो और महिलाएं इमा मोमोन और इमा चोउबी साथ थीं | जब हम दृढ़ता से डटे रहे तब आर्मी ने हम में से केवल दो लोगों को ही कैम्प में अंदर आने की अनुमति दी | इमा मोमोन हिन्दी जानती थीं | तब मैं और इमा मोमोन अंदर गये थे | अंदर जाने पर बताया कि आर्मी की कोई मीटिंग चल रही है इसीलिए कुछ देर बाद में आना | हमें दो बजे तक इंतजार करना पड़ा | लेकिन हम वहीँ खड़े इंतजार करते रहे क्यूंकि हमारे युवा में हमारा विश्वास दृढ था कि लोउरेम्बम इबोमचा पूर्णतया निर्दोष है |

इमा थोकचोम रमानी कहती हैं कि हमारा संघर्ष आर्मी से नहीं है | बल्कि उन गलत और अशांत वातावरण के खिलाफ है जो मणिपुर की प्रगति में बाधक है |

यह घटना मैयरा पाईबी के इतिहास में कड़वा अनुभव लेकर आई | जिसने निशाबंदी को मैयरा पाईबी बनाया | समाज के हित में नई पीढ़ी को सकारात्मक दिशा देने और किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध अहिंसात्मक दृष्टिकोण से अपनी लड़ाई लड़ने के लिए मणिपुर की महिलाओं ने स्वयं को और अधिक मजबूत किया और संगठित किया | इमा रमानी ने बताया कि वे लेइकायी-लेइकायी (प्रत्येक मोहल्ले) की महिलाओं को इकठ्ठा कर रात के अँधेरे में मैयरा (मशाल) हाथ में लेकर गली-गली घूमती थीं और यह प्रत्येक दिन का क्रम था |

प्रश्न- मैयरा पाईबी के इतिहास में <u>निशाबन्दी</u> का समय काल बहुत महत्वपूर्ण है | इस यात्रा में निशाबन्दी का क्या महत्व है ?

प्रोफेसर बिमोला देवी बताती हैं कि मणिपुर में 1904 और 1939 में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ दो ऐतिहासिक लड़ाइयों में मेतेई महिलाओं की भागीदारी निर्णायक और प्रभावी थी | लेकिन निशाबन्दी की प्रथा ने मणिपुर में महिलाओं को एक अलग पहचान और विशेष दर्जा दिलाया | सन 1960 के दशक के बाद निशाबंदी पूरे राज्य में शराब बंद कराने के लिए अभियान चलाये हुए थीं | उनका कहना था कि राज्य में शराब बंद होनी चाहिए क्यूंकि इससे परिवार बिखर रहे हैं और हमारे नौजवान भटक रहे हैं | घरेलू हिंसा बहुत बढ़ गयी थी | और यह किसी एक घर में नहीं अपितु लगभग प्रत्येक गाँव-प्रत्येक घर का हाल था | शाम होते ही यह चलन बढ़ने लगता था | शराब बेचने वाले व्यापारी समृद्ध हो रहे थे और समाज कमजोर हो रहा था |

इमा रमानी कहती हैं कि मणिपुर में शराब नहीं होती | यहाँ निशाबंदी है लेकिन सरकारी सहयोग से नशा मणिपुर में प्रवेश कर गया है | हमारे यहाँ जो रिवाज है वह केवल स्थानीय जनजातियों में शुद्ध पारम्परिक तरीके से बनाई गयी निशा का ही प्रयोग किया जाता था जो कि स्वास्थ्य हेतु से प्रयोग होती थी | लेकिन बाहर से बनी रासायनिक शराब ने नौजवानों को भ्रष्ट कर दिया |

अत: इसी के विरोध में महिलाओं ने अभियान चलाया तथा जिन दुकानों में शराब बिकती थी उनके आगे बैठकर अहिंसक धरना-प्रदर्शन किये | ऐसा करने पर शराब व्यापारियों द्वारा उन्हें धमकियां भी मिलती थीं | पर वे अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विरोध पर दृढ़ता से डटी रहीं | जो व्यक्ति शराब पीता पाया जाता उसे शराब छोड़ने के लिए प्रेरित करतीं और भविष्य में दुबारा ऐसा ना करने की सलाह देतीं |

निशाबंदी के इन निरंतर प्रयासों का ही परिणाम था कि 1990 में मणिपुर को निशा रहित (Dry state) राज्य घोषित किया गया |

मणिपुर में थांग-ता के गुरु बिसेश्वर शर्मा कहते हैं कि मणिपुर में अपने गुरुओं और महिलाओं का बहुत सम्मान होता है पर ऐसा कहते हैं कि उस समय यहाँ उसकी उलट स्थिति थी | आज मैयरा पायिबी मणिपुर की प्रत्येक बस्ती-गली में मौजूद है | मणिपुर में मणिपुरी पुलिस पुरुषों के साथ दुर्व्यवहार कर सकती है लेकिन महिलाओं के साथ नहीं | मणिपुर में महिलाओं को यह सम्मान मैयरा पायिबी नामक शक्ति की ही देन है | नारी का सम्मान वापस लाने में मैयरा पाईबी का बहुत बड़ा योगदान है | बिसेश्वर शर्मा बताते हैं कि थांग-ता में भी हम आत्म रक्षा के साथ-साथ समाज की रक्षा करने के गुण सिखाते हैं और मैयरा पाईबी भी अपने समाज के लिए वही कार्य करती हैं |

ओइनाम सरिता देवी कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि पहले महिलाओं का सम्मान नहीं था, किन्तु अब महिलाओं की क्षमता पर प्रश्न नहीं उठते | मणिपुर की महिलाएं उग्रवाद, गरीबी, बेरोज़गारी, शराब, सीमा सुरक्षा और प्रजाहित के प्रति राज्य की उदासीनता के खिलाफ़ कई दशकों से मोर्चा खोले हुए हैं | और अपनी बात रखने का तरीका हमेशा अहिंसात्मक ही रखा है |

प्रश्न- आज मैयरा पाईबी के बहुत सारे संगठन बन गये हैं | क्या ये सब अलग-अलग हैं या इनकी कोई एक Mother Organization भी है ?

खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि मैयरा पाईबी के लेकाई स्तरीय से लेकर राज्य स्तर के कई संगठन आज रजिस्टर्ड हैं | और बहुत सारे ऐसे भी संगठन हैं जो अपने-अपने स्तर पर काम कर रहे हैं लेकिन पंजीकृत नहीं हैं | इनका कोई Mother Organization नहीं है |

उनका कहना है कि मैयरा पायिबी के अंतर्गत गली-मोहल्ले (लेकाई) से लेकर प्रदेश स्तर तक जितने भी संगठन हैं वे पंजीकृत हों या ना हों लेकिन आपस में संगठित अवश्य हैं |

यह सही है कि आज कई सन्गठन बन गये हैं | लेकिन सभी का उद्देश्य एक ही है, क्यूंकि हम सभी एक ही परम्परा का भाग हैं | हम सभी एक साथ मिलकर समस्याओं का समाधान ढूंढने और समाज को आगे बढाने का काम करते हैं | और जब आवश्यकता होती है सभी समूह एकसाथ आ खड़े होते हैं | इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि कोई समूह रजिस्टर्ड है या नहीं है | या कोई महिला किसी रजिस्टर्ड मैयरा पाईबी समूह से जुड़ी है या नहीं | मैयरा पाईबी समूहों का रजिस्टर्ड होना या ना होना मैयरा पाईबी के अस्तित्व पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लगाता |

प्रश्न- जो महिलाएं मैयरा पाईबी संगठनों में किसी दायित्व में नहीं हैं वे कैसी इसमें अपना योगदान देती हैं ?

खोम्दोम्बी देवी का कहना है कि मणिपुर की प्रत्येक महिला जो विवाहित है वह इस अभियान से जुड़ी है | इसके पीछे विचार यह है कि स्थायी तौर पर मैयरा पाईबी समूह में अधिकतर वे महिलाओं शामिल होती हैं जो विवाहित हैं | क्यूंकि विवाह होने के बाद महिलाएं अपने ससुराल चली जाती हैं अत: विवाह के बाद वे जिस लेकाई में जायेंगी वहां जाकर मैयरा पाईबी के संगठनों से जुड़ती हैं | लेकिन लायमयूम खुलना कहती हैं कि आज जो महिला जहाँ है (शादी से पहले और बाद में) वह वहीँ रहकर मैयरा पाईबी से जुड़ जाती है और उनके कार्यक्रमों में भाग लेती है |

प्रश्न- मैयरा पाईबी की कार्यपद्धति और काम करने का दायरा कितना बड़ा है | क्या मेतेई समाज के बाहर भी आप सक्रिय हैं ?

मैयरा पाईबी एक स्वप्रेरित, आत्मनिर्भर और न्यायप्रिय अहिंसावादी संगठन है | जो हमें हमारी संस्कृति से मिला है वही हमारी कार्यपद्धति में झलकता है | खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि यह परम्परा मेतेई समाज में शुरू हुई | लेकिन यहाँ किसी सम्प्रदायवाद या जातिवादी प्रथा को कोई स्थान नहीं है | परेशानी आने पर हम यह नहीं देखते कि वह हमारे समाज से सम्बन्धित है या नहीं | यहाँ सभी समुदायों में मैयरा पाईबी परिस्थिति एवं आवश्यकता अनुसार अपने-अपने इलाकों में सक्रिय रूप से काम करती हैं | और सभी समुदायों में मैयरा पाईबी की स्वीकार्यता भी है |

प्रश्न- समाज सुरक्षा के साथ-साथ महिलाओं की स्वयं की सुरक्षा का भी प्रश्न उठता है | इसके लिए आप क्या कदम उठाते हैं ?

AFSPA हटाना, और बाहर से आने वाली शराब पर रोक लगाना और ILP लागू करना हमारी प्रमुख मांग थी | इसके अभियान में कुल चार लोग मेरी साथी प्रमोदिनी सहित मारे गये थे | इमा रमानी देवी भावुकता से कहती हैं कि असामाजिक गतिविधियों के कारण हमारी आँखों के सामने हमारा घर-गाँव-समाज बर्बाद हो रहे थे | अँधेरा होते ही डर की अवस्था रहती थी | सेना की मणिपुर समाज के युवाओं के प्रति अप्रिय कार्रवाई के चलते और कभी-भी ऑपरेशन चलाने के डर से हम रात-रात भर सोते नहीं थे बल्कि महिलाएं अपनी-अपनी लेकाई में हाथों में मशाल लेकर रखवाली करती थीं | महिलाओं की सुरक्षा को लेकर मैयरा पाईबी ने सरकार के समक्ष भी आवाज उठाई | लेकिन बहुत कुछ सहायता नहीं मिली ऐसे में हम स्वयं ही एकजुट होती हैं |

ए.के. जानकी लेयमा ने अपने साक्षात्कार में बताया था कि हम ड्रग्स व्यसन, शराब और महिलाओं के प्रति अपराध के खिलाफ संघर्षरत हैं | हालाँकि मेतेई समाज पुरुष प्रधान समाज है फिर भी महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं | मणिपुर में राजशाही के दौरान भी जब पुरुष युद्ध में बाहर जाते थे तो महिलाएं उनकी जगह लेती थीं, घर भी वही चलाती थीं, व्यापार भी वही संभालती थीं, पैसों का लेन-देन आदि सब महिलाओं के हाथों में ही रहता था |

इमा रमानी कहती हैं कि हम स्वयं अपनी सुरक्षा का भी जिम्मा उठाती हैं | मणिपुर की प्रत्येक महिला संकट के समय मैयरा पायिबी ही है | यही मैयरा पायिबी की मूल शक्ति है कि संकट के समय प्रत्येक महिला अपने उत्तरदायित्व को भली-भांति समझती है |

प्रश्न- मणिपुर में सामाजिक एवं सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने और संकट से उबरने के लिए मैयरा पाईबी सक्रिय है, यह कहना कितना सही है ?

इमा रमानी कहती हैं कि जो जनसंख्या बाहर से (मयांग) मणिपुर में प्रवेश करती हैं उसकी किसी प्रकार की जानकारी हमें नहीं रहती | जैसे वह किस प्रदेश का है, उसके माता-पिता कौन हैं, उसकी पहचान क्या है ? ऐसे में यदि उसके द्वारा या उसके साथ कुछ अप्रिय घटता है तो उसकी जिम्मेदारी कौन लेगा |

वे आगे कहती हैं कि ऐसे ही यदि जब राज्य (शासक) ही अपने नागरिकों के प्रति उदार और न्यायप्रिय न हो तो नागरिक किस दृष्टि से राज्य के प्रति अपनी सेवा देंगे | दोनों ही परिस्थितियों में मैयरा पाईबी अपनी भूमिका समाज हित में निभाती है | यह करने के लिए हमें किसी श्रेय, पुरस्कार अथवा पहचान की लालसा या आवश्यकता नहीं हैं |

इस प्रश्न पर इमा सखी देवी बहुत गम्भीरता से कहती हैं कि हमारे संस्कृति सम्पन्न मेतेई समाज में शराब पीना, जुआ खेलना या भीख मांगना बहुत ही बुरा माना जाता है | तो हम उपद्रव जैसी घटनाओं के विषय में तो सोच भी नहीं सकते | लेकिन बाहरी लोगों की भीड़ और आधुनिक बदलावों ने नई पीढ़ी के अंदर इन सभी दुर्गुणों को भर दिया है | अपने ही देश में हम अपने ही लोगों के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं करना चाहते | लेकिन (सीमावर्ती प्रदेश होने के नाते) प्रदेश की सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने और सामाजिक संरचना के हित में यह जरूरी है कि मणिपुर के बाहर से जो भी जनसंख्या यहाँ आती है उनकी पड़ताल की जाये और आवश्यक जाँच के बाद ही उन्हें मणिपुर में प्रवेश करने दिया जाए | इसीलिए इनर लाइन परमिट (ILP) लागू करने का सुझाव मैयरा पाईबी सदा से देती रही है |

सगोलशेम खोम्दोम्बी देवी पिछली घटनाएँ याद करते हुए बताती हैं कि कई बार ऐसा भी हुआ है कि हमारे घरों के जो नौजवान काम करने के उद्देश्य से बाहर जाते थे (मणिपुर के अन्य हिस्सों में) वे लौट कर ही नहीं आये | ऐसे में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना जरूरी था | इनर लाइन परमिट (ILP) को बनाने और जो नौजवान गायब हो जाते थे उन्हें खोजने और वापस लाने में भी मैयरा पाईबी का अहम योगदान है |

प्रश्न- आज के समय में मैयरा पाईबी समाज के युवाओं के लिए किस उद्देश्य के साथ काम कर रही है ?

खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि किसी भी काल-समय में विकास के पहले मानकों में अच्छी शिक्षा अनिवार्य रूप से शामिल है, इसके बिना भविष्य अधूरा है | माता-पिता और परिवार के माध्यम से युवाओं में संस्कार दिया जाना जरूरी है | युवाओं को अच्छे एवं सुलभ स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ साथ खेलने के अवसर एवं स्थान उपलब्ध कराना | लेकाई स्तर पर गेम क्लब खुलवाना | हमारे विचार से यह आज के समय की मांग है | सम्भव हुआ तो हम अपनी जगह जो निशाबंदी या मैयरा पाईबी के क्रियाकलापों के लिए आरक्षित है वहां हमारे क्षेत्र के युवाओं के लिये एक खेल का मैदान (प्लेग्राउंड) बना कर देंगें |

प्रश्न- मैयरा पाईबी अपना समूह किस प्रकार से संगठित करती और आगे बढ़ाती हैं ?

खोम्दोम्बी देवी इस बारे में बताती हैं कि मैयरा पायिबी के संगठनात्मक ढांचे को तीन भागों में प्रादेशिक, जिला और लेकाई (मोहल्ला) स्तर पर बांटा गया है | हम दस लेकाई (मोहल्लों) को मिलाकर एक समूह बनाते हैं | या अधिक मजबूत करने के लिए 20 लेइकायी को मिलाकर भी एक समूह बनाते हैं | इस प्रकार 10-20 मोहल्लों को मिलाकर मैयरा पयीबी का एक समूह तैयार किया जाता है | हमारे समूहों में जितनी अधिक मोहल्लों की महिलाएं होंगीं, समूह उतना ही अधिक मजबूत बनेगा | सभी लेकाई एक-दूसरे के लिए सहायतार्थ साथ रहती हैं | मैयरा पाईबी विवाहित महिलाओं का ही ग्रुप है |

आज मैयरा पायीबी की कुछ प्रमुख आर्गेनाइजेशन रजिस्टर्ड हो गयी हैं | जिसकी अलग-अलग शाखाएं हैं | लेकाई स्तर के मैयरा पाईबी समूह ऐसी राज्य स्तरीय कुछ प्रमुख आर्गेनाइजेशन से जुड़े भी हुए हैं | इन संगठनों में दायित्वपूर्ण पद सम्भालने के लिए-मनोबल, बुद्धिमत्ता, सामाजिक-राजनीतिक और सामयिक समझ, अपने समय की सक्रिय कार्यकर्ता और निर्भय व्यक्तित्व वाली महिला को प्राथमिकता दी जाती है |

लेकिन इसमें कोई जाति प्रथा नहीं है | सभी का इसमें स्वागत है | सभी समुदाय और धर्म के लोगों का स्वागत है | यहाँ सभी कम्युनिटी इसको एक्सेप्ट करते है | कई बार ऐसा भी हुआ है कि किसी बाहरी व्यक्ति (मयांग) पर कोई विपत्ति आई है और स्थानीय मैयरा पाईबी समूह ने उनकी सहायता की है | हम संगठित हैं इसीलिए इतनी सक्षम भी हैं | और हमारे संगठन की एकमात्र शक्ति हमारे उद्देश्यों का एक होना है |

प्रश्न- जब समाज में कभी विपत्ति आई या सेना की तरफ से कोई ऑपरेशन चलाया गया तो ऐसे में एक-दूसरे से सम्पर्क करने या विपत्ति के समय एकजुट होने के लिए क्या उपाय या पद्धति अपनाते थे ?

इमा रमानी बताती हैं कि हमारे ज़माने में जब आज की तरह फ़ोन वगैरह का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था तब भी मैयरा पायिबी की संचार व्यवस्था दुरुस्त थी | आज आधुनिक संसाधन उपलब्ध होने पर यह और अधिक सुगम है | वे बताती हैं कि उस समय में बिजली के खम्बे पर पत्थर से आवाज करके गली की महिलाओं को चौकन्ना करते थे और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें एकजुट करते थे | खम्बे पर चोट की आवाज सुनते ही काम करती महिलाएं भी तुरंत बाहर इकठ्ठा होने के लिए भागती थीं | ताकि किसी भी अनहोनी को टाला जा सके |

खोम्दोम्बी देवी बताती है कि तीन आवाज सुनकर हम लोगों को पास के हाट (कम्युनिटी हॉल) में जाकर इकठ्ठा होना होता था और यदि आवाज लगातार बजायी जा रही है तो इसे आपात स्थिति माना जाता है और सभी काम छोड़कर तुरंत इकठ्ठा होना होता है |

इमा रमानी कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि हम केवल सेना के खिलाफ ही लामबंद होते थे | यह तो मैयरा पाईबी की नकारात्मक छवि प्रस्तुत की गयी है | सरकार तक या समाज में मैयरा पाईबी की सकारात्मक छवि प्रस्तुत नहीं की गयी है | वास्तव में हम शराब की दुकानों, महिलाओं पर होने वाले अत्याचार को रोकने के लिए और असामाजिक तत्वों के विरुद्ध इकठ्ठा होते थे |

प्रश्न- बड़े मुद्दे जो पूरे प्रदेश से सम्बन्धित हैं उसके अलावा लेकाई स्तर पर स्थानीय विकास के लिए क्या प्रयास मैयरा पाईबी समूहों द्वारा किये जाते हैं ?

जैसा कि पहले बताया मैयरा पाईबी लोकल (स्थानीय) विषयों को लेकर भी बहुत से काम करती हैं | पूरे विश्व में शायद मैयरा पाईबी ही एक ऐसा समूह है जो केवल महिलाओं के द्वारा संचालित होकर भी केवल महिलाओं की लडाई नहीं लड़ता बल्कि समाज के प्रत्येक पक्ष के साथ छोटी-से-छोटी समस्या को भी सुलझाने का प्रयास करता है | अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है | जैसे घरेलू हिंसा को रोकना, निशाबंदी करना (शराब सेवन व बेचने पर रोक लगाना), घरों में वैवाहिक जीवन में किसी अलगाव या समस्या में मध्यस्थता करना मैयरा पाईबी के काम का हिस्सा है | कल की आने वाली पीढियां खराब ना हों इसके लिए मैयरा पायीबी काम करती हैं | शरारती तत्वों को सुधारना, बेरोजगार युवाओं को प्रोत्साहित करके रोजगार की तरफ प्रेरित करना, शराब बेचने वालों को बंद करवाना | जो महिलाएं व्यभिचार करती हैं, या दूसरों का घर खराब करती हैं, उनको भी ठीक राह पर लाने का काम मैयरा मैयरा करती हैं |

यदि कभी बिजली का तार खेतों में टूट कर गिरने से या अन्य किसी आपदा से फसल खराब हो ने की स्थिति में, पशुधन के नुकसान के होने पर भी सरकार से मुआवजा दिलाने का काम मैयरा पयीबी करती है |

कई बार राशन बाँटने वाला तय माप से कम राशन देता है तो उसके खिलाफ भी हम आवाज उठाते हैं | मिट्टी का तेल, चावल, चीनी, या राशन का सामान आधा देना और आधा की घूसखोरी करना इस पर भी हम विरोध करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर पूरे समाज के साथ उसके खिलाफ कार्रवाई भी करते हैं |

समाज में ऐसी अनेक महिलाएं हैं जो बहुत कौशल जानती हैं | वीमेन कोओपरेटिव सोसाइटी के माध्यम से महिलाओं को काम दिए गये कि जो महिलाएं बेकार बैठी हैं उन्हें हाथ को काम देना जैसे बुनाई, कढ़ाई आदि |

पहले लोग वर्ष में एक ही बार खेती करते थे और बाकि समय खेत खाली पड़े रहते थे तो वर्ष में एक की जगह दो बार खेती करवाने के लिए पुरुषों को प्रेरित करना, तालाब साफ़ करना, मछली का फार्म चलाना ये सब महिलाएं ही करती हैं | ये सब काम हम सब मिलकर करते हैं | कई मोहल्ले मिलकर एक साथ काम करते है | और आत्मनिर्भरता रहना ही इसका मूल मंत्र हैं |

अपनी लेकाई (गली-मोहल्ले) के मामलों से लेकर पड़ोस में होने वाले झगडे, चोरी, अंडरग्राउंड के लोगों (उग्रवादियों) द्वारा जबरन वसूली का खतरा, भाग कर विवाह कर लेना, दूसरी शादी या शादी होने के बाद भी किसी से सम्बन्ध रखना, तलाशी अभियान के बाद सेना द्वारा लोगों को ले जाने पर उन्हें विशेषकर महिलाओं को छुड़ाना जैसे सभी मामलों के सम्बन्ध में मैयरा पायिबी सक्रिय भूमिका निभाती है |

सरल शब्दों में कहें तो यह एक पंचायत का ही स्वरुप है | हमारे समाज में किसी भी प्रकार की ऐसी बाधा जिसे हम अपने स्तर पर ही सुलझा सकते हैं और समाज को विकास की दिशा में ले जाकर आत्मनिर्भर बना सकते हैं उसके लिए मैयरा पाईबी तत्पर रहती हैं |

प्रश्न- आज मैयरा पाईबी मणिपुर का बहुत बड़ा सन्गठन है | इसके अभियानों और कार्यक्रमों का आर्थिक प्रबन्धन कैसे किया जाता है ?

इमा रमानी देवी कहती हैं कि जब हमने संगठन शुरू किया था तो जहाँ आज सिटी कन्वेंशन सेंटर है वहां हमारा अर्थात नूपी समाज (आल मणिपुर वीमेन सोशल रिफार्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज) का प्रमुख ऑफिस था लेकिन अब हम यहाँ (पैलेस कम्पाउंड में राजा भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर काम्प्लेक्स के सामने एक ईमारत की तीसरी मंजिल के एक ही हॉल में) छोटे सी जगह में सिमट कर रह गये हैं | जो संगठन के लोगों (महिला कार्यकर्ताओं) के आवास हेतु भी उपयोग में आता है | (इसी आवास पर इमा रमानी देवी से साक्षात्कार लिया गया था) | हमने अपनी मेहनत से जो ऑफिस बनाया था, उसे भी नहीं चलाना दिया गया |

खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि उदहारण के लिए जैसे हम (बामोनकम्पू वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन) एक रजिस्टर्ड ग्रुप हैं | लेकिन मैयरा पाईबी के किसी समूह या संगठन को किसी भी प्रकार से कोई सरकारी सहायता नहीं मिलती है | कोई खर्चा सरकार नहीं देती | हम सब अपनी तरफ से ही खर्चा करती हैं | हम अपनी आवश्यकता और कार्यक्रम के अनुसार समाज से मांगकर आर्थिक कमी को पूरा करते हैं | कुछ कार्यक्रम करते हैं तो स्थानीय प्रधानं या विधायक से सपोर्ट लेते हैं | हम दस-दस रूपये का एक साप्ताहिक सहयोग ले लेते हैं जिससे मैयरा पयीबी के रजिस्टर्ड समूहों का खर्च चलता है | हट (कम्युनिटी हॉल) बनाने का खर्चा स्थानीय प्रधान से या विधायक से देने का आग्रह करते हैं | ऑफिस बनाने या आवश्यक सामग्री का खर्चा समर्थ व्यक्तियों के माध्यम से दान स्वरुप माँगा जात है | इम्फाल में ही पोरोमपट में ILP की लडाई में शामिल बलिदानी लोगों का स्मृति स्थल है, वहां भी हर वर्ष आर्थिक रूप से दान करते हैं |

प्रश्न- समाज के विकास के लिये समर्पित मैयरा पाईबी क्या मणिपुर प्रदेश के बाहर भी अपनी पहचान रखती है ?

खगोल्शेम खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि हाँ यह सही है कि यदि देश में एक विचार के सभी समूह मिलकर काम करेंगे तो कार्य और अधिक प्रभावी रूप से होगा | अन्य प्रदेशों में अन्य-अन्य नामों से अनेक महिला संगठन कार्य करते हैं | मणिपुर में मैयरा पाईबी के नाम से जाने जाते हैं | हां, यह सही है कि स्वप्रेरणा से जनित ऐसा कोई संगठित उपक्रम शायद नहीं है जैसा कि मैयरा पाईबी है | अन्य सभी (अधिकतर) रजिस्टर्ड एन.जी.ओ हैं जो महिलाओं द्वारा संचालित वा महिलाओं के लिए काम करते हैं | कई ऐसे भी स्थान हैं जहाँ आज के दौर में महिलाएं संगठित हो रही हैं और सामाजिक समस्याओं पर काम कर रही हैं और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठा रही हैं | जैसे महिला मंगल दल आदि | लेकिन वे किसी परम्परा या सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा नहीं | मैयरा पाईबी तो मणिपुर की महिलाओं को विरासत के तौर पर मिलती है | जो सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है |

इमा रमानी देवी कहती हैं यह विचार सही है कि देश-विदेश में जाकर भी हमें अपनी उपस्थिति दर्ज करनी चाहिए और अपनी पहचान बनानी चाहिए | लेकिन हमें दूसरी भाषा नहीं आती, इसलिए हम दूसरों तक जल्दी नहीं पहुंच पाते | साथ ही संसाधनों की कमी और सांगठनिक असहयोग के कारण भी हम इसमें सफल नहीं हो पाते | इसके लिए हमें और सामर्थ्यवान होना होगा और अधिक समर्थन तथा सहयोग प्राप्त करना होगा | यदि बाहर के लोग हमसे, हमारे विचार से और हमारे उद्देश्यों से जुड़ना चाहेंगे और बुलाएँगे तो हम जरुर साथ जायेंगे |

प्रश्न- मैयरा पाईबी किस प्रकार से प्रशासन की सहायता करने में समर्थ होती है ?

इमा रमानी कहती हैं कि जब कोई परेशानी आती है तो हम उसमें नगा या कुकी या नेपाली या बाहरी नहीं देखते सिर्फ परेशानियों और समस्याओं को सुलझाने पर हमारा ध्यान केन्द्रित रहता है | आवश्यकता पड़ने पर कभी-कभी पुलिस की भी मदद ली जाती है और पुलिस की मदद की भी जाती है | यदि हमारे समाज में कोई उपद्रवी या शरारती तत्व होता है तो हम खुद ही उसे सेना को सौंप देते हैं ताकि भय का माहौल ना बने | वे कहती हैं कि समाज के इस काम को करने के लिए मैं छ: सालों तक घर के अंदर नहीं सोयी | मैयरा पाईबी के लिए मैं घर से बाहर ही रही | हम चाहते थे कि AFSPA मणिपुर से हटा दिया जाये | सेना कि लोग मनमर्जी भी करते थे | और यदि शक के आधार पर किसी को सेना ने उठा लिया और यदि वह हिरासत में मर गया तो उसके खिलाफ अपराध साबित ही कर दिया जाता था | रमानी देवी कहती हैं कि जो शरारती तत्व हैं उन्हें अवश्य ही सजा मिलनी चाहिए | जो लोग बरसों से मणिपुर में रह रहे हैं, वे यहीं के ही हैं लेकिन मणिपुर की सुरक्षा के लिए यह जरूरी है कि बाहर से आने वाले लोगों पर कुछ अंकुश लगाया जाए |

इमा रमानी गम्भीर और भावुक होते हुए कहती हैं कि अपराध हुए थे लेकिन सभी उसमें शामिल नहीं थे | वे दृढ़ता से कह रही थीं- 'गलत को हम बर्दाश्त नहीं करते थे' | हमने सेना और पुलिस से कहा था कि जानलेवा प्रताड़ना देना बिलकुल न्यायोचित नहीं है | हम भी चाहते हैं कि हमारे मणिपुर में शांति रहे लेकिन हमारे नौजवानों की जान की कीमत पर नहीं |

रमानी देवी कहती हैं कि आज यह आन्दोलन सैकड़ों वर्ष पुराना हो गया है | जब खम्बे पर चोट करके हम महिलाओं को सावधान होने और इकठ्ठा होने का इशारा करते थे तो इस

आवाज पर पुलिस सवाल करने लगी थी कि वे लालटेन बजा कर या खम्बे पर आवाज करके शरारती तत्वों को बचा रहे हैं और उन्हें भागने का संकेत कर रहे हैं | लेकिन हमने उन्हें समझाया कि हम सब इकठ्ठा होने के लिए इस संकेत का प्रयोग करते हैं | यदि कोई हमारे समाज का व्यक्ति गलत करेगा चाहे वह मेरा बच्चा हो, हम उसे बचायेंगे नहीं | आपके सुपुर्द ही करेंगे | यह करके हम आपकी मदद ही करते हैं लेकिन आपसे भी अपेक्षा है कि जिन लोगों को शक के कारण आप हिरासत में लेते हैं उन्हें शारीरिक पीड़ा, और अपंग कर देने वाली शारीरिक प्रताड़ना नहीं दें, क्यूंकि सम्भव है वह व्यक्ति वैसा ना हो या सुधर सकता हो |

अब अपनी उम्र का 9वां दशक पार करने आयीं इमा रमानी देवी बड़ी उम्मीद के साथ कहती हैं कि हम समाज के लिए काम करते हैं , लेकिन सरकारी सहायता तो दूर हमारा सही संदेश भी अभी तक सरकार तक नहीं पहुंचा, हमारी छवि गलत प्रस्तुत की गयी | हमें राजनीति से कुछ नहीं लेना लेकिन वर्तमान सरकार की अभी तक की गतिविधियों से उन्हें आशा है कि इस दिशा में वह जरूर कुछ ठोस कदम उठाएगी जिस से मणिपुर को आतंक और उसके कारण होने वाले नुकसानों से निजात मिल सके | हम चाहते हैं कि मणिपुर के सभी लोग प्यार-मोहब्बत से रहें |